CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

प्राचीन भारत

वैकल्पिक इतिहास

भाग -1

यूजीसी नेट/जेआरएफ, राजस्थान 1st ग्रेड व 2nd ग्रेड सीयूईटी पीजी, टीजीटी/पीजीटी तथा राज्य स्तरीय प्रवक्ता/अध्यापक भर्ती परीक्षाओं एवं संघ व राज्य लोक सेवा आयोग की प्रारंभिक व मुख्य परीक्षा के लिए उपयोगी

प्राचीन भारत

वैकल्पिक इतिहास

भाग–1

यूजीसी नेट/जेआरएफ, राजस्थान 1st ग्रेड व 2nd ग्रेड
सीयूईटी पीजी, टीजीटी/पीजीटी तथा राज्य स्तरीय प्रवक्ता/अध्यापक भर्ती परीक्षाओं
एवं संघ व राज्य लोक सेवा आयोग की प्रारंभिक व मुख्य परीक्षा तथा
विश्वविद्यालय स्तर के परीक्षाओं के लिए उपयोगी

संपादक
एन. एन. ओझा
लेखन एवं प्रस्तुति
क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

पुस्तक के संबंध में

यह पुस्तक यूजीसी नेट/जेआरएफ, राजस्थान 1st ग्रेड व 2nd ग्रेड सीयूईटी पीजी, टीजीटी/पीजीटी तथा राज्य स्तरीय प्रवक्ता/अध्यापक भर्ती परीक्षाओं एवं संघ व राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रारंभिक व मुख्य परीक्षा तथा विश्वविद्यालय स्तर के परीक्षाओं की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

पुस्तक में प्राचीन भारत के संपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं को प्रतियोगी एवं प्रवेश परीक्षाओं के पाठ्यक्रम पर आधारित सामग्री को समाहित किया गया है। पुस्तक की रूपरेखा तैयार करते समय हमारा उद्देश्य बहुआयामी रहा है। यह प्राचीन इतिहास के सभी पक्षों पर समग्र रूप से प्रकाश डालती।

वर्तमान में प्रतियोगी परीक्षाओं के बदलते पैटर्न को ध्यान में रखते हुए पुस्तक को तथ्यात्मक और संकल्पनात्मक दोनों दृष्टिकोण से तैयार किया गया है। यह उन प्रतियोगियों के लिए भी लाभकारी साबित होगा जो न तो इतिहास के विद्यार्थी रहे हैं और न ही इतिहास का उन्होंने पहले कभी अध्ययन किया है।

इस पुस्तक का लेखन और विषय वस्तु इस दृष्टिकोण से तैयार की गई है कि इस पुस्तक का अध्ययन करके भविष्य में आयोजित होने वाली परीक्षाओं में पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर सहजता से दिये जा सकें।

पुस्तक को त्रुटिहीन रूप में प्रस्तुत करने का यथासम्भव प्रयास किया गया है, परन्तु इतिहास से संबंधित सभी तथ्यों को पूर्णत: सत्यापित नहीं किया जा सकता, क्योंकि काल एवं परिस्थिति के अनुसार लेखक के अपने-अपने विचार होते हैं, अत: पुस्तक में सर्वमान्य तथ्यों एवं विचारों को ही समाहित किया गया है।

फिर भी यदि इस पुस्तक में किसी प्रकार की त्रुटि होती है तो हम उसके लिए क्षमाप्रार्थी हैं। साथ ही आपसे आग्रह है कि त्रुटियों के संबध में हमें अवगत कराएं, ताकि हम आगामी अंक में उनमें सुधार कर सकें।

इस पुस्तक के लेखन में निम्न महत्वपूर्ण पुस्तकों तथा इग्नू, एनसीईआरटी व अन्य राज्य बोर्डों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के सामग्रियों का संकलन परीक्षोपयोगी दृष्टिकोण से किया गया है।

- ए.एल. बाशम - ***अद्‌भुत भारत***
- राधा कृष्ण चौधरी -***प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास***
- डी.एन. झा - ***प्राचीन भारत: एक रूपरेखा***
- डी.के कौशाम्बी-***इंट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ इंडियन हिस्ट्री***
- डी.एन. झा और के.एम. श्रीमाली -***प्राचीन भारत का इतिहास***
- एच.सी. रायचौधरी- ***प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास***
- रायचौधरी, दत्त और मजूमदार-***भारत का बृहत् इतिहास*** **vol -1**
- आर. एस. शर्मा - ***प्राचीन भारत के राजनीतिक विचार एवं संस्थाएं***
- आर.एन. नंदी-***सोशल रूट ऑफ रिलिजन इन एनशिएंट इंडिया***
- के.ए.एन. शास्त्री - ***दक्षिण भारत का इतिहास***
- रोमिला थापर - ***प्राचीन भारत, अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन***
- वी.ए. स्मिथ - ***आरंभिक भारत का इतिहास***
- कामेश्वर प्रसाद - ***भारत का इतिहास- आरंभिक काल से 1206 ई. तक***
- आर.एस. त्रिपाठी - ***कनौज का इतिहास***
- ओम प्रकाश-***प्राचीन भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास***

आशा है कि यह पुस्तक अपने नवीनतम स्वरूप में आपके लिए अत्यंत उपयोगी साबित होगी।

–संपादक

अनुक्रमणिका

प्राचीन भारत

1. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत....................1–12

- **प्राचीन ऐतिहासिक स्रोतों का वर्गीकरण 3**
- **प्राचीन इतिहास के प्रमुख स्रोत................................ 4**
- **पुरातात्विक स्रोत 4**
  - 1. अभिलेख.. 4
  - 2. स्मारक.. 5
  - 3. मुद्राएं.. 5
- **साहित्यिक स्रोत.. 6**
- **(क) धार्मिक साहित्य.. 6**
  - (1) वेद या श्रुति संहिता.............................. 6
  - (2) ब्राह्मण 7
  - (3) आरण्यक.. 7
  - (4) उपनिषद.. 7
  - (5) महाकाव्य.. 7
  - (6) पुराण.. 7
  - (7) स्मृति ग्रंथ.. 8
  - (8) बौद्ध साहित्य.. 8
  - (9) जैन साहित्य.. 9
- **(ख) धर्मेतर भारतीय साहित्य................................ 9**
  - ❖ अर्थशास्त्र.. 9
  - ❖ अन्य धर्मेत्तर साहित्य 9
  - ❖ संगम साहित्य.. 9
- **विदेशी यात्रियों के वृत्तांत....................................... 10**
  - 1. यूनानी लेखक.. 10
  - 2. चीनी यात्रियों के वृत्तांत.............................. 10
  - 3. अरबी यात्रियों के वृत्तांत.............................. 11
- **प्राचीन भारतीय इतिहास का लेखन.......................... 11**
  - ❖ औपनिवेशिक उपागम.............................. 11
  - ❖ राष्ट्रवादी उपागम 12
  - ❖ मार्क्सवादी दृष्टिकोण 12
- **विदेशी लेखकों की खामियां.................................. 12**

2. भारत में प्रागैतिहासिक संस्कृतियां................13–21

- **परिचय.. 13**
- **पुरापाषाण काल.. 13**
  - ❖ प्राक् इतिहास.. 14
  - ❖ निम्न-पुरापाषाण काल 14
  - ❖ मध्य-पुरापाषाण काल.............................. 15
  - ❖ उच्च-पुरापाषाण काल.............................. 15
  - ❖ पाषाण युग.. 15
  - ❖ संस्कृति के लक्षण.............................. 15
  - ❖ मुख्य स्थल.. 15
  - ❖ महत्व, उपकरण, विशेषताएं.............................. 15
  - ❖ पुरापाषाणकालीन जीवन.............................. 16
- **मध्यपाषाण काल 16**
  - ❖ मध्यपाषाण कालीन जीवन.............................. 17
- **उत्तर या नवपाषाण काल 17**
  - ❖ नवपाषाणकाल की प्रादेशिक विशिष्टता.............................. 18
  - ❖ **नवपाषाण कालीन जीवन...................................20**

3. सिंधु घाटी सभ्यता..22–37

- **सिंधु घाटी सभ्यता का उद्गम.................................. 23**
- **सिंधु घाटी सभ्यता का विस्तार 23**
  - ❖ आरंभिक हड़प्पाकालीन बस्तियां.............................. 24
  - ❖ हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख विशेषताएं.............................. 25
  - ❖ हड़प्पा नगरों के उत्थान में कृषि की भूमिका.............. 26
- **नगर योजना एवं भवन निर्माण योजना.................... 26**
  - ❖ सिन्धु प्रदेश.. 26
  - ❖ मोहनजोदड़ो.. 26
  - ❖ हड़प्पा.. 27
  - ❖ कालीबंगा.. 27
  - ❖ **लोथल..27**
  - ❖ नगर नियोजन की विशेषताएं.............................. 27
- **सामाजिक जीवन 28**
  - ❖ सामाजिक वर्गीकरण तथा संगठन.............................. 28
  - ❖ भोजन तथा खाद्य सामग्री.............................. 28
  - ❖ वस्त्र तथा पहनावा.............................. 28
  - ❖ आभूषण तथा शृंगार.............................. 28
  - ❖ आमोद-प्रमोद के साधन.............................. 29
  - ❖ विविध गृहापयोगी उपकरण तथा सामग्री.............................. 29
  - ❖ **नारी की स्थिति..29**
- **राजनैतिक जीवन.. 29**
- **आर्थिक जीवन.. 30**
  - ❖ **कृषि..30**
  - ❖ **पशुपालन..30**
  - ❖ **उद्योग तथा व्यापार..31**
  - ❖ **माप तौल के साधन..31**

- ❖ मुहरें 31
- ❖ मुद्रा 32
- ❖ अन्य देशों के साथ व्यापारिक संबंध 32

➲ **धार्मिक जीवन 32**
- ❖ परम पुरुष अथवा शिवोपासना 32
- ❖ वृक्ष पूजा 33
- ❖ पशु एवं नागपूजा 33
- ❖ अग्निपूजा तथा पशुबलि 33
- ❖ जलपूजा 33
- ❖ अंधविश्वास 34
- ❖ शव विसर्जन 34

➲ **कलात्मक अभिरुचि 34**
- ❖ मूर्तिकला 34
- ❖ धातु कृतियाँ 34
- ❖ पाषाण कला 34
- ❖ गुरिया निर्माण कला 34
- ❖ चित्रकला 35
- ❖ मुद्रा निर्माण कला 35
- ❖ लेखन कला 36
- ❖ संगीत तथा नृत्यकला 36

➲ **हड़प्पा सभ्यता का पत्तन 36**
- ❖ हड़प्पा सभ्यता के पतन के प्रमाण 36
- ❖ हड़प्पा सभ्यता के पत्तन से संबंधित विद्वानों का मत ... 36

4. सिंधु क्षेत्र के बाहर की संस्कृतियां .... 38 – 43
- ❖ ताम्र पाषाणिक संस्कृति का वर्गीकरण 38
- 1. गेरुए चित्रित बर्तनों की संस्कृति 38
- 2. काले एवं लाल मृद्भांड संस्कृति 38
- 3. चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति 38
- 4. उत्तरी काले पॉलिश वाली मृद्भांड संस्कृति 39

➲ **ताम्रपाषाणिक संस्कृतियां 39**
- ❖ कायथ संस्कृति 39
- ❖ आहड़ अथवा बनास संस्कृति 39
- ❖ सवालदा संस्कृति 40
- ❖ मालवा संस्कृति 40
- ❖ जोर्वे संस्कृति 40
- ❖ पूर्वी भारत में ताम्रपाषाण संस्कृतियां 41

➲ **ताम्रपाषाण संस्कृतियों की विशेषताएं 41**
- ❖ अर्थव्यवस्था 41
- ❖ धर्म एवं विश्वास 41
- ❖ दाह संस्कार 42
- ❖ सामाजिक संगठन 42
- ❖ अन्य विशेषताएं 42

➲ **भारत में लौह युग 42**
- ❖ उत्तर भारत में लौह युग 43
- ❖ दक्षिण भारत में लौह युग 43

➲ **दक्षिण भारत की आरंभिक कृषि बस्तियां 43**

5. वैदिक सभ्यता .... 44 – 70

➲ **वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.) 44**

➲ **आर्यों का विस्तार 44**
- ❖ ऋग्वेद के महत्वपूर्ण शब्द 44

➲ **आर्यों का मूल निवास से संबंधित विद्वानों का मत 45**
- ❖ आर्यों के मूल स्थान, भारत 45
- ❖ आर्यों का मूल स्थान, उत्तरी ध्रुव 45
- ❖ आर्यों के आगमन से संबंधित सिद्धांत 46
- ❖ आर्यों का मूल निवास, यूरोप 46
- ❖ आर्यों का मूल स्थान, मध्य एशिया 46

➲ **वैदिक ग्रंथ 47**
- ❖ वेद 47
- ❖ ऋग्वेद 47
- ❖ सामवेद 47
- ❖ यजुर्वेद 48
- ❖ अथर्ववेद 48
- ❖ ब्राह्मण ग्रंथ 48
- ❖ आरण्यक ग्रंथ 48
- ❖ उपनिषद 49

➲ **सामाजिक जीवन 49**

➲ **आर्यों का राजनैतिक संगठन 51**

➲ **आर्थिक जीवन 53**

➲ **धार्मिक जीवन 53**

➲ **उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.) 54**

➲ **राजतंत्र का विकास 54**

➲ **सामाजिक जीवन 55**
- ❖ सिंधु एवं वैदिक सभ्यता में अंतर 56
- ❖ वैदिक संस्कृति 56
- ❖ सिंधु संस्कृति 56
- ❖ ऋगवैदिक से उत्तर वैदिक काल में समाज की बदलती स्थिति 57
- ❖ वर्ण व्यवस्था का विकास 57
- ❖ विभिन्न वर्णों की स्थिति 58
- ❖ पुरुषार्थ 59
- ❖ आश्रम व्यवस्था 59
- ❖ संस्कार 60
- ❖ विवाह 60
- ❖ आर्थिक जीवन 61

➲ **धार्मिक जीवन एवं दर्शन 62**

➲ **उपनिषद से संबंधित विचारधारा 63**

➲ **सूत्र साहित्य 63**
- ❖ सामाजिक जीवन 64
- ❖ आर्थिक जीवन 65
- ❖ राजनैतिक संगठन 65
- ❖ धार्मिक जीवन 66

➲ **महाकाव्य कालीन सभ्यता 67**
- ❖ राजनैतिक व्यवस्था 67
- ❖ सामाजिक दशा 69

❖ आर्थिक दशा 69
❖ धार्मिक जीवन..... 70

6. महाजनपदों से नंद तक राज्य निर्माण..... 71 – 105

➲ **महाजनपदों का उदय..... 71**
➲ **महाजनपदों की शासन-पद्धति 73**
➲ **गणराज्यों की प्रशासनिक व्यवस्था 74**
❖ गणराज्यों की दुर्बलताएं..... 74
❖ शाक्य गण..... 75
❖ लिच्छविगण..... 75
➲ **मगध साम्राज्य का उदय..... 75**
➲ **हर्यक वंश (544 ई. पू. से 412 ई. पू. तक)..... 75**
❖ बिम्बिसार (544-492 ई.पू.)..... 75
❖ अजातशत्रु (492-460 ई.पू.)..... 76
❖ उदयिन (लगभग 460-444 ई.पू.) 77
➲ **शिशुनाग वंश (लगभग 412-344 ई.पू.)..... 77**
❖ शिशुनाग..... 77
❖ कालाशोक (काकवर्ण) 78
➲ **नन्दवंश (344-324/23 ई.पू.)..... 78**
❖ महापद्म..... 78
❖ धनानंद..... 78
➲ **मगध राज्य की सफलता के कारण..... 79**
➲ **नगरीकरण (छठीं शताब्दी ईसा पूर्व)..... 80**
➲ **ईरान तथा यूनान के आक्रमण 80**
❖ पारसी आक्रमण (ईरानी) 80
❖ ईरानी आक्रमण का प्रभाव..... 81
❖ यूनानी आक्रमण..... 81
❖ सिकन्दर के आक्रमण का प्रभाव..... 82
➲ **धार्मिक आंदोलन एवं धार्मिक संप्रदाय..... 83**
❖ **धार्मिक आन्दोलन की पृष्ठभूमि..... 83**
➲ **जैन धर्म: शिक्षाएं एवं दर्शन..... 85**
❖ जैन धर्म का त्रिरत्न 86
❖ जैन दर्शन..... 87
❖ जैन-संघ..... 87
❖ जैन धर्म की विशेषताएं 88
❖ **जैन धर्म का महत्व एवं मानवता के सन्दर्भ में प्रासंगिकता..... 88**
➲ **बौद्ध धर्म..... 88**
❖ गौतम बुद्ध का जीवन परिचय..... 88
❖ बौद्ध धर्म की प्रचार 90
❖ बौद्ध धर्म की विशेषताएं तथा सिद्धान्त..... 90
❖ संघ का संगठन..... 91
❖ महात्मा बुद्ध के जीवन की पांच घटनाएं (बौद्धधर्म का प्रतीक) 91
❖ हीनयान और महायान में अंतर..... 92
❖ बौद्ध परिषदें..... 92
➲ **बौद्ध धर्म के प्रसार के कारक..... 93**
❖ बौद्ध धर्म व जैन धर्म में तुलना..... 93
❖ बौद्ध व वैदिक धर्म में तुलना..... 93
❖ बौद्ध धर्म के पतन के कारण..... 94
❖ बौद्ध धर्म का महत्व..... 94
➲ **बुद्धकालीन सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था 94**
❖ सामाजिक जीवन..... 95
❖ आर्थिक जीवन..... 95
❖ राजनैतिक व्यवस्था..... 96
➲ **प्रमुख दर्शन..... 97**
❖ सांख्य दर्शन..... 97
❖ योग दर्शन..... 99
❖ महाभारत में उल्लिखित शिक्षा केन्द्रों के रूप में आश्रमों के विभाग..... 99
❖ न्याय तथा वैशेषिक दर्शन..... 100
❖ वैशेषिक दर्शन..... 101
❖ मीमांसा दर्शन..... 102
❖ वेदान्त दर्शन..... 104
❖ उपनिषद..... 104
❖ उपनिषदों का महत्व..... 105
❖ गीता दर्शन..... 105

7. मौर्य साम्राज्य..... 106 – 139

➲ **मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत..... 106**
1. साहित्यिक स्रोत..... 106
➲ **अर्थशास्त्र में वर्णित प्रमुख तथ्य..... 107**
2. विदेशियों के यात्रा वृतांत..... 108
3. पुरातात्त्विक साक्ष्य..... 109
➲ **मौर्यों की उत्पत्ति 109**
❖ **ब्राह्मण साहित्य** 109
❖ **बौद्ध ग्रंथ** 109
❖ **अर्थशास्त्र**..... 110
➲ **चन्द्रगुप्त मौर्य (322 ई.पू. - 298 ई.पू.)..... 110**
❖ मगध पर आधिपत्य..... 111
❖ मलयकेतु के विद्रोह का दमन..... 111
❖ सेल्यूकस के साथ संघर्ष..... 111
❖ दक्षिण भारत की विजय..... 112
❖ साम्राज्य विस्तार..... 112
➲ **बिन्दुसार 'अमित्रघात' (298 ई.पू. से 273 ई. पू.) 112**
➲ **सम्राट अशोक (273 ई.पू. से 232 ई.पू.)..... 113**
❖ साम्राज्य विस्तार..... 116
❖ अशोक के अभिलेखों के खोजकर्ता..... 116
❖ अशोक का धर्म परिवर्तन..... 117
❖ अशोक के शिलालेखों में धम्म की विषय-वस्तु..... 117
❖ अशोक के 15वें शिलालेख में उल्लिखित समकालीन शासक..... 117
❖ धर्म का स्वरूप..... 118
❖ धम्म की विशेषताएं..... 119
❖ अशोक द्वारा धम्म प्रचार..... 120

❖ मौर्यकालीन स्थानीय पदाधिकारी 121
❖ इतिहासकारों के अनुसार अशोक के धम्म का स्वरूप..... 121
❖ अशोक के सात स्तंभ लेखों में उल्लिखित मुख्य विषय..... 121
❖ अशोक की यात्राएं/महत्वपूर्ण कार्य..... 121

➲ **अशोक के प्रशासकीय सुधार 122**
➲ **मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण 123**
➲ **अशोक के शासनकाल का मूल्यांकन 126**
➲ **चन्द्रगुप्त का शासन-प्रबंधन..... 126**
❖ मंत्रि-परिषद..... 127
❖ मंत्री..... 127
❖ मौर्यकालीन कुछ अन्य सहायक अधिकारी व कर्मचारी..... 127
❖ समाहर्ता..... 128
❖ नगरों का प्रबंधन..... 129
❖ ग्राम प्रशासन..... 129
❖ न्याय व्यवस्था..... 129
❖ गुप्तचर विभाग..... 129
❖ वित्त व्यवस्था..... 129
❖ सैन्य प्रबंधन..... 130
➲ **मौर्यकालीन व्यवस्था 130**
❖ सामाजिक व्यवस्था..... 130
❖ आर्थिक व्यवस्था..... 132
➲ **मौर्यकालीन कर व्यवस्था 134**
❖ धार्मिक व्यवस्था 135
❖ मौर्यकालीन शिक्षा और साहित्य..... 135
❖ लिपि..... 136
➲ **मौर्य कला एवं स्थापत्य..... 136**
1. दरबारी अथवा राजकीय कला..... 136
❖ अशोक और ईरानी स्तंभ लेखों में अंतर..... 137
❖ बौद्ध स्तूपों के प्रकार..... 137
❖ गुहा-विहार 138
2. लोककला..... 138

8. मौर्योत्तर भारत..... 140 – 159
❖ मौर्योत्तर काल के स्रोत..... 140
➲ **शुंग राजवंश (185 ई.पू.-75 ई.पू.)..... 140**
❖ प्रशासनिक संरचना 141
❖ धार्मिक नीति..... 141
➲ **कण्व वंश (75 ई.पू.-30 ई.पू.)..... 141**
➲ **हिन्द-यूनानी (इंडो-ग्रीक) 141**
❖ भारत पर प्रभाव..... 141
➲ **हिन्द-पार्थियन (पहलव)..... 142**
➲ **कुषाण 142**
❖ कनिष्क (78-105 ई.)..... 143
❖ कुषाण काल के सिक्कों पर अंकित देवता..... 143
❖ कुषाणों की धार्मिक नीति 144
➲ **शक..... 144**
➲ **मौर्योत्तर भारत का समाज..... 144**
❖ जातियों का विकास..... 145
➲ **सातवाहन वंश एवं प्रायद्वीप में राज्य निर्माण 146**
❖ स्रोत 146
➲ **आन्ध्र सातवाहन..... 147**
❖ सातवाहन प्रशासन 147
❖ समाज 148
❖ आर्थिक जीवन..... 148
❖ कला एवं स्थापत्य..... 148
❖ धर्म..... 148
❖ शिक्षा-भाषा-साहित्य..... 148
➲ **मौर्योत्तर काल की अर्थव्यवस्था..... 148**
❖ व्यापार एवं उद्योग-धन्धे..... 149
❖ गिल्डों एवं व्यापार संगठनों की भूमिका..... 150
❖ नगरों का विकास..... 150
➲ **मध्य एशिया तथा उत्तर भारत से संपर्क का प्रभाव..... 151**
➲ **मौर्योत्तर कालीन धर्म..... 151**
❖ बौद्ध धर्म..... 152
❖ जैन धर्म..... 153
❖ वैष्णव धर्म..... 154
❖ शैव धर्म 155
❖ शैव धर्म के विभिन्न सम्प्रदाय..... 156
❖ लिंगायत सम्प्रदाय..... 157
❖ शक्ति धर्म..... 157
➲ **मौर्योत्तर काल की कला एवं संस्कृति..... 157**
❖ स्तूप..... 158
❖ गुफा वास्तुकला..... 158
❖ मूर्तिकला..... 158
❖ गांधार कला केन्द्र..... 158
❖ मथुरा कला..... 159
❖ अमरावती कला..... 159
❖ चित्रकला..... 159
❖ मौर्योत्तर कालीन साहित्य..... 159

9. संगम काल..... 160 – 168
➲ **संगमयुगीन संस्कृति..... 160**
❖ उपलब्ध संगम साहित्य..... 161
➲ **राज्यों का उदय..... 162**
❖ चेर राज्य..... 162
❖ चोल राज्य..... 163
❖ पाण्ड्य राज्य..... 163
➲ **संगमकालीन प्रशासनिक व्यवस्था 164**
➲ **सामाजिक जीवन 165**
❖ कृषि वर्ग..... 166
❖ व्यापारी वर्ग..... 166
❖ मृतक संस्कार..... 166
➲ **आर्थिक जीवन 166**
❖ व्यापार एवं वाणिज्य..... 167

❖ राज्य की आय का मुख्य स्रोत 167

➲ **धार्मिक जीवन 167**

10. गुप्त साम्राज्य ..... 169 – 198

➲ **गुप्त साम्राज्य का स्रोत 169**
❖ साहित्यिक स्रोत 169
❖ अभिलेखीय स्त्रोत 170
❖ विदेशी स्त्रोत 170

➲ **गुप्तों की उत्पत्ति 170**

➲ **राजनीतिक इतिहास 171**
❖ देवगुप्त तृतीय, विष्णुगुप्त द्वितीय और जीवितगुप्त द्वितीय 178

➲ **गुप्त साम्राज्य का पतन 178**

➲ **गुप्त प्रशासन 178**
❖ **न्यायिक अधिकारी** 181

➲ **प्रशासनिक विभाग 181**

➲ **भूमि एवं राजस्व 182**

➲ **आर्थिक जीवन 183**

➲ **धार्मिक अवस्था 184**
❖ गुप्त काल के समय की जाने वाली उपासना 186

➲ **सामाजिक जीवन 189**

➲ **साहित्य और विज्ञान 189**
❖ गुप्त काल के साहित्यकार 190
❖ विज्ञान तथा तकनीक 192

➲ **कला और स्थापत्य 193**
❖ वास्तुकला-मन्दिर 193
❖ मूर्तिकला 194
❖ मृण्मूर्ति कला 195
❖ धातु कला 195

➲ **चित्रकला 195**
❖ अजन्ता की चित्रकला 195
❖ बाघ की चित्रकला 196

➲ **फाह्यान का भारत विवरण 196**

11. गुप्त काल के परवर्ती राज्य 199-214

➲ **वाकाटक राजवंश 199**
❖ **इतिहास के स्रोत 199**
❖ **विन्ध्यशक्ति (255-275 ई.) 199**
❖ प्रवरसेन प्रथम (275-335 ई.) 199
❖ प्रधान शाखा 200

➲ **बासीम शाखा 201**
❖ हरिषेण (475-510 ईस्वी) 201

➲ **मालवा कायशोधर्मन 201**

➲ **कन्नौज का मौखरि राजवंश 202**
❖ इतिहास के स्रोत 202

➲ **राजनीतिक इतिहास 202**
❖ **हरिवर्मा** 202
❖ **आदित्यवर्मा** 203
❖ **ईश्वरवर्मा** 203
❖ **ईशानवर्मा** 203
❖ **सर्ववर्मा** 203
❖ **अवन्ति वर्मा** 203
❖ **ग्रहवर्मा** 203

➲ **मौखरि वंश का पतन 204**

➲ **थानेश्वर का वर्द्धन या पुष्यभूति राजवंश 204**
❖ साहित्य स्रोत 204
❖ विदेशी विवरण 204
❖ अभिलेखीय स्त्रोत 205
❖ मुहरें 205

➲ **राजनीतिक इतिहास 205**
❖ प्रभाकरवर्द्धन 205
❖ राज्यवर्द्धन 206
❖ हर्षवर्द्धन (606-647 ईस्वी) 206
❖ हर्ष के सैनिक अभियान 206
❖ **साम्राज्य विस्तार** 208

➲ **शासन प्रबन्ध 209**
❖ **सम्राट** 209
❖ **सामन्त तथा मंत्रिपरिषद** 209
❖ प्रशासनिक व्यवस्था 209
❖ दण्ड विधान 210
❖ राजस्व प्रशासन 210
❖ सेना 210

➲ **धार्मिक जीवन 211**
❖ कन्नौज की सभा 211
❖ प्रयाग सभा 211

➲ **सामाजिक जीवन 212**

➲ **आर्थिक दशा 212**

➲ **शिक्षा और साहित्य 212**
❖ चीनी यात्री ह्वेनसांग का भारत विवरण 213
❖ चीनी यात्री इत्सिंग का भारत विवरण 214

12. महत्वपूर्ण शब्दावली ..... 215 – 218
❖ विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली 215
❖ हड़प्पा कालीन पारिभाषिक शब्दावली 215
❖ ऋग्वैदिक पारिभाषिक शब्दावली 215
❖ उत्तर वैदिक कालीन पारिषाषिक शब्दावली 215
❖ वैदिकयुगीन शब्दावली 216
❖ महाजनपदकालीन पारिभाषिक शब्दावली 216
❖ महत्वपूर्ण शब्दावली 216
❖ धार्मिक क्रान्ति से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली 216
❖ संगमकालीन राजस्व व्यवस्था से संबंधित शब्दावली 217
❖ मार्यकालीन पारिभाषिक शब्दावली 217
❖ गुप्तकालीन पारिभाषिक शब्दावलियां 218
❖ प्राचीन इतिहास के शब्दावली 218

प्राचीन भारत

अध्याय 1

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

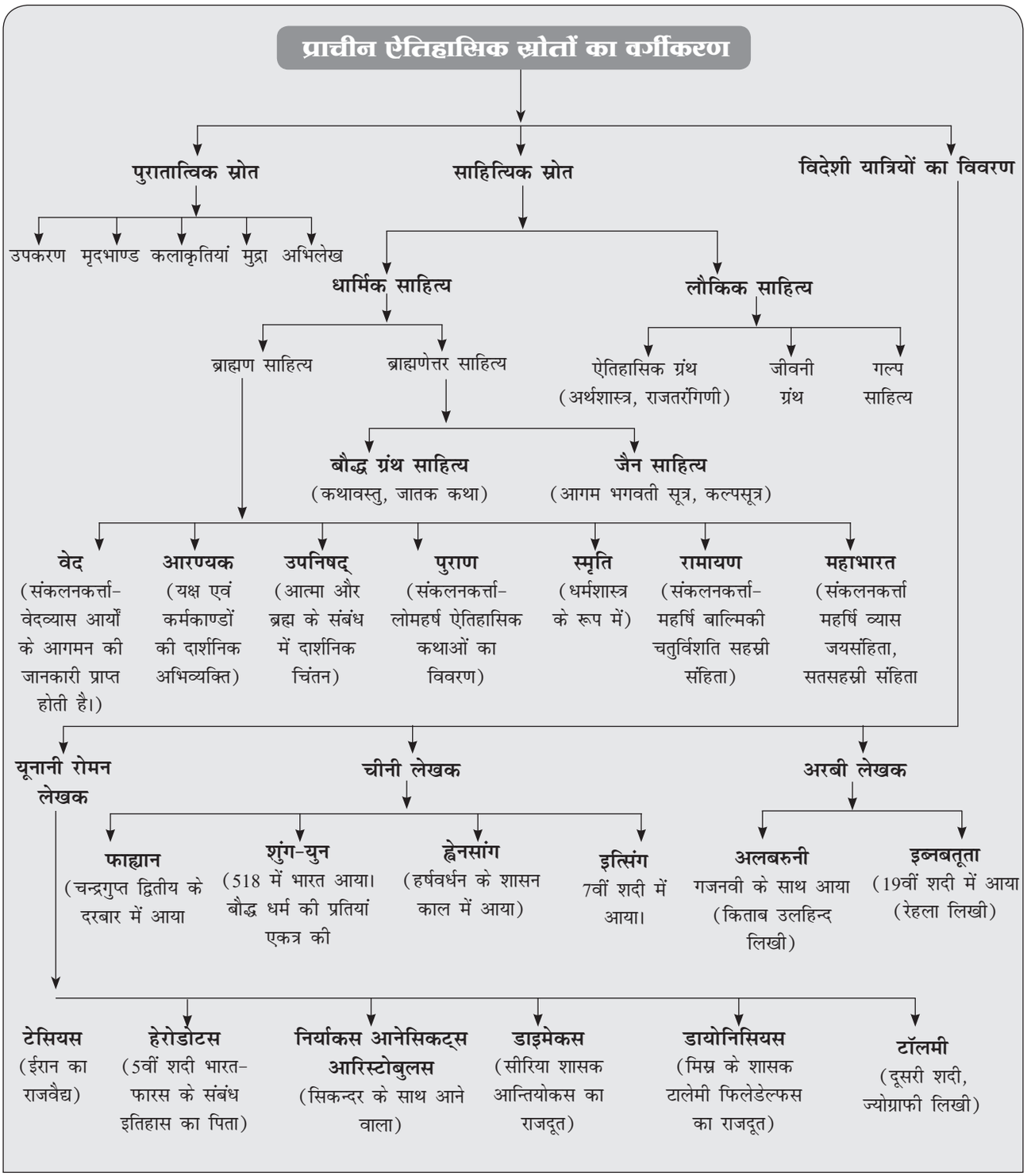

प्राचीन भारतीय इतिहास अत्यन्त गौरवशाली रहा है। पाश्चात्य विदेशी विद्वानों का मत था कि भारतीयों को इतिहास लेखन की समझ नहीं थी और इतिहास के नाम पर जो लिखा गया कहानी एवं धर्मग्रन्थ से अधिक कुछ नहीं है। भारतीय इतिहासकारों ने पाश्चात्य इतिहासकारों की इस संकल्पना को सतही ज्ञान कहा है। **प्राचीन भारत में इतिहास के ज्ञान को बहुत उच्च स्थान दिया जाता था,** उसे वेद के समान पवित्र माना जाता था। **अर्थवेद, ब्राह्मणों और उपनिषदों** में इतिहास ज्ञान को पुराण की एक शाखा के रूप में शामिल किया गया है। पुराणों के अनुसार इतिहास के विषय हैं- **सर्ग** (सृष्टि की उत्पत्ति), **प्रतिसर्ग** (सृष्टि का प्रत्यावर्तन एवं प्रति विकास) मनवन्तर (समय की आवृत्ति), वंश (राजाओं और ऋषियों की वंशावली) और **वंशानुचरित** (कुछ चुने हुए पात्रों की जवनियां)।

आधुनिक इतिहासकार ऐतिहासिक घटनाओं में **कार्य-कारण** संबंध स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु प्राचीन इतिहासकार केवल उन घटनाओं का वर्णन करते थे जिनसे जनसाधारण को कुछ शिक्षा मिल सके जैसे- इतिहास का प्रायोजन यह समझाना और बताना था कि **व्यक्तियों का परिवार के प्रति, परिवार का अपने वंश के प्रति, वंशों का गांवों के प्रति, गांवों का जनपद व राष्ट्र के प्रति और अन्ततः समूची मानवता के प्रति क्या कर्तव्य है** और उनमें त्याग एवं बलिदान की भावना कैसे उत्पन्न की जाये।

महाभारत में प्रस्तुत इतिहास की परिभाषा भारतीयों की इतिहास विषयक संकल्पना पर पर्याप्त प्रकाश डालती है, जिसमें उद्धृत करते हुए लिखा गया है कि ऐसी प्राचीन रुचिकर कथा, जिससे **धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष** की शिक्षा मिल सके, 'इतिहास' कहलाती है।

इन पुरुषार्थों को करने की प्रेरणा देने में इतिहास भी एक साधन था, इसलिए प्राचीन भारतीय इतिहासकार उन घटनाओं को कोई महत्व नहीं देते थे, जिसे इन चारों पुरुषार्थों की शिक्षा न मिल सके।

इसलिए प्राचीन भारत का इतिहास राजनीतिक कम, सांस्कृतिक अधिक है। भिन्न दृष्टिकोण से रचित होने के कारण अधिकांश भारतीय ग्रंथ आधुनिक परिभाषा के अंतर्गत इतिहास ग्रंथ नहीं हैं, तथापि उनमें बहुमूल्य ऐतिहासिक सामग्री अंर्तनिहित है।

प्राचीन इतिहास के प्रमुख स्रोत्र

भारत के इतिहास निर्माण के लिए उपलब्ध स्त्रोतों के आधार पर अधोलिखित तीन शीर्षकों में रख सकते हैं-

(1) पुरातात्विक स्त्रोत (2) साहित्यिक स्त्रोत (3) विदेशी यात्रियों के वृत्तांत

पुरातात्विक स्रोत

प्राचीन भारत के अध्ययन में पुरातात्विक सामग्री का विशिष्ट महत्त्व है। इससे भारतवर्ष के अनेक तथाकथित अन्ध युगों (Dark Ages) पर प्रकाश पड़ा है तथा अनेकानेक संदिग्ध ऐतिहासिक मतों का खण्डन हुआ है। भारतीय इतिहास में लिखित अभिलेखों की प्रध ानता है। हालांकि मंदिर के अवशेष, सिक्के, घर के अवशेष, खंभों के गड्डे (*Post Holes*), मिट्टी के बर्तन, कोष्ठागार आदि के रूप में पुरावशेष भी साक्ष्य की एक महत्वपूर्ण श्रेणी का गठन करते हैं।

पुरातत्व का महत्व इसी बात से समझा जा सकता है कि यह आज एकमात्र इतिहास ही नहीं, वरन एक स्वतंत्र 'पुरातत्त्व विज्ञान' के रूप में विकसित हो गया है। पुरातात्विक सामग्री में किसी भी प्रकार की हेर-फेर करने की संभावना बहुत कम रहती है, इसलिए यह इतिहास की वास्तविक रूप-रेखा निर्माण में बहुत सहायक होती है। साहित्यिक साक्ष्य जहां मौन हैं, वहां पुरातात्विक स्त्रोत पर्याप्त मात्रा में साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।

पुरातात्विक स्त्रोतों को तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं-

1. अभिलेख, 2. स्मारक और भवन 3. मुद्राएं।

1. अभिलेख

पुरातात्विक स्रोतों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभिलेख हैं। ये अभिलेख पाषाण शिलाओं, स्तंभों, ताम्रपत्रों, दीवारों, मुद्राओं, एवं प्रतिमाओं आदि पर खुदे हुए मिले हैं। सबसे प्राचीन अभिलेखों में मध्य एशिया के **बोगजकोई** से प्राप्त अभिलेख हैं।

शिलालेख इतिहास लिखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण और विश्वसनीय स्त्रोत है। समकालीन दस्तावेज होने के कारण शिलालेख बाद के **प्रक्षेपों** से मुक्त होते हैं। ये उसी रूप में दिखाई देते हैं, जिसमें ये पहली बार उत्कीर्ण किए गए थे।

भारत में प्राप्त सबसे प्राचीन अभिलेख **हड़प्पा संस्कृति** की मुहरों पर अंकित हैं। ये लगभग **2500 ई. पू.** के हैं। परन्तु **इनका पढ़ना अभी तक संभव नहीं हुआ** है। सर्वप्रथम अशोक के शिलालेख पढे गए। ये शिलालेख पूरे उपमहाद्वीप में चट्टानों की सतह और पत्थर के स्तंभों पर पाए गए हैं। ये चार लिपियों में लिखे हुए हैं। अशोक के तत्कालिक साम्राज्य, जो वर्तमान अफगानिस्तान में था, वहां अरामाइक और ग्रीक लिपियों का प्रयोग किया गया था, जबकि गंधार क्षेत्र में खरोष्ठी लिपि प्रयोग में लाई जाती थी।

खरोष्ठी लिपि भारतीय भाषाओं की वर्णमाला प्रणाली पर विकसित हुई और दाएं से बाएं लिखी जाती थी। 'ब्राह्मी लिपि' को सबसे पहले **1837 ई.** में ईस्ट इंडिया कंपनी के लोक सेवा अधिकारी **जेम्स प्रिंसेप ने** पढ़ा था। केवल उत्तर-पश्चिमी भारत में मिले कुछ अभिलेख खरोष्ठी लिपि में हैं। **पाकिस्तान और अफगानिस्तान** के अशोक के शिलालेखों में यूनानी और आरमेइक लिपियों का प्रयोग हुआ है।

सम्राट अशोक का नाम मास्की (निजाम का राज्य) **निट्टूर और गुर्ज्जरा** (मध्य प्रदेश) से प्राप्त अभिलेखों में स्पष्ट रूप से मिलता है। अशोक के अन्य अभिलेखों से उसके धर्म और **राजत्व के आदर्श** पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। ऐसे लेखों में **खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख,** शक **क्षत्रप रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख,** सातवाहन नरेश पुलुमावी का नासिक गुहालेख, गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तंभ लेख, मालव नरेश यशोबर्मन का मन्दसौर अभिलेख, चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल का अभिलेख, बंगाल के शासक विजय सेन का देवपाड़ा अभिलेख आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सरकारी और निजी अभिलेखों से प्राचीन भारत की भूव्यवस्था और प्रशासन की जानकारी प्राप्त होती है।

सरकारी अभिलेख या तो राजकवियों द्वारा रचित प्रशस्तियां हैं या भूमि अनुदान पत्र होते थे। इन अभिलेखों से शासकों की नीतियाँ, विजय तथा उपलब्धियों की सूचना प्राप्त होती है।

अध्याय 2

भारत में प्रागैतिहासिक संस्कृतियां

परिचय

मानव सभ्यता का बीजारोपण सर्वप्रथम पाषाण काल से प्रारंभ होता है। इस काल की उपलब्ध सामग्रियां मुख्यत: पाषाण निर्मित हैं। इस तथ्य को सूचित करने के लिए इस काल को 'पाषाण काल' की संज्ञा दी गई है।

पाषाणकालीन मनुष्य के क्रमिक विकास को परिलक्षित करने के लिए **थॉमसन** ने पाषाण युग को पुरातन पाषाण युग और नवीन पाषाण युग में विभाजित किया, जिसे 1863 ई. में लुब्बॉक (Lubbock) महोदय ने पुरातन-पाषाण युग को **पुरापाषाण युग** (Palaeolithic Age) और **नवीनपाषाण युग** (Neolithic Age) का नाम दिया। **बौद्धिक विकास, सांस्कृतिक प्रगति** एवं जीवनोपयोगी अनुसंधानों के दृष्टिकोण से उत्तर पाषाण, पूर्वपाषाण काल की अपेक्षा कहीं अधिक उन्नत था।

इतिहासकारों ने इन दोनों के बीच के काल को मध्यपाषाणकाल (Mesolithic Age) नाम दिया है। विद्वानों का मत है कि मध्य पाषाण काल पुरापाषाणकाल और उत्तरपाषाण काल के बीच में एक कड़ी है, जो पाषाणकालीन सभ्यता के क्रमिक, सुसम्बद्ध और अविछिन्न विकास की सूचना देता है। अत: तीनों कालों का अलग-अलग अध्ययन अनिवार्य है।

पुरा पाषाण काल (Palaeolithic Age)

पाषाण काल की प्रारंभिक अवस्था को पुरापाषाण काल कहते हैं। मानव जीवन का यह काल पाषाणकाल का सबसे लंबा काल था। भारत के विभिन्न भागों में यह काल लगभग 2.5 लाख वर्ष से कुछ पहले आरम्भ हुई तथा लगभग 10 हजार वर्ष पहले तक बनी रही।

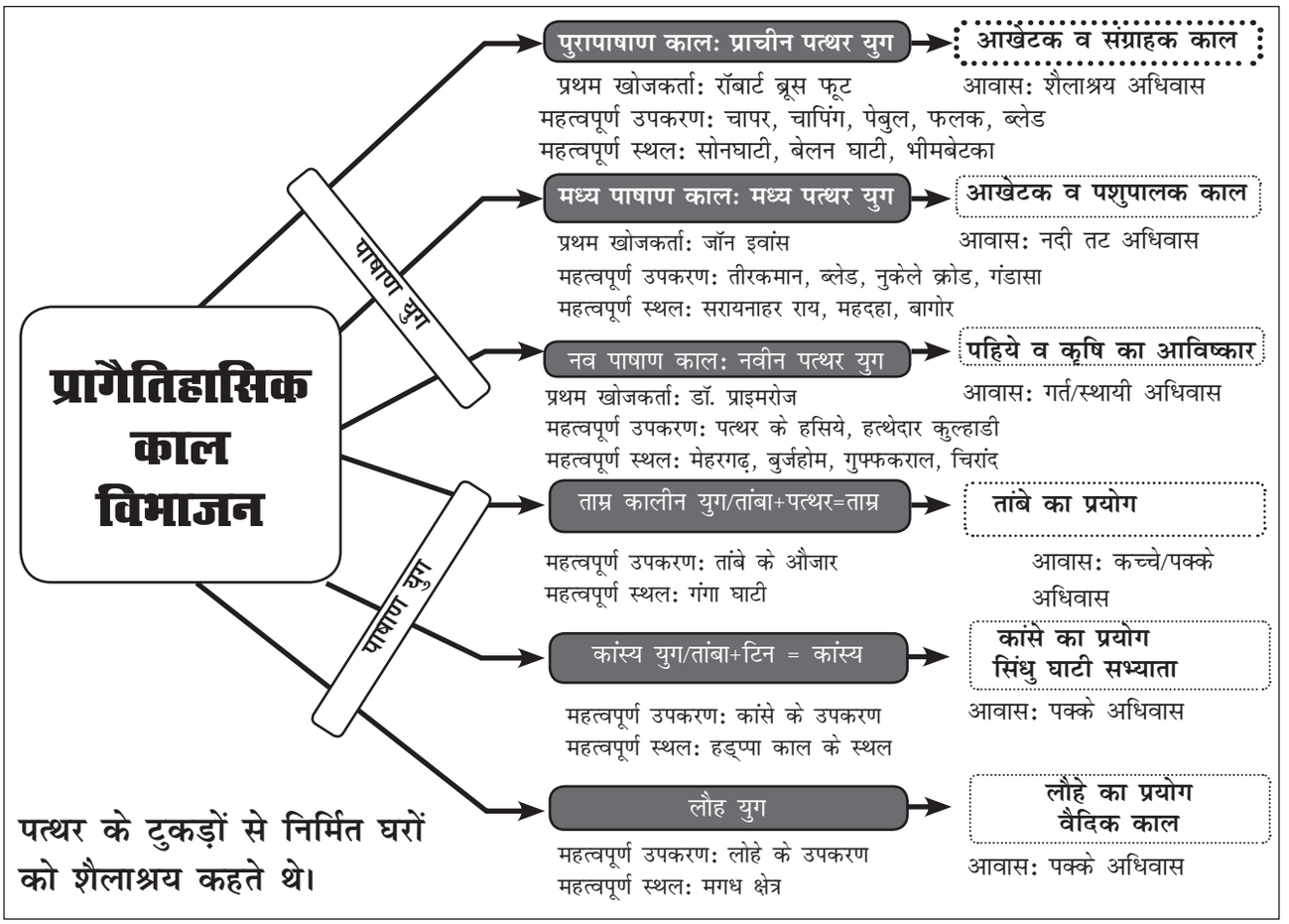

अध्याय 3

सिंधु घाटी सभ्यता

विश्व की प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं में सिंधु घाटी की सभ्यता एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस संस्कृति का उदय ताम्र-पाषाणिक पृष्ठभूमि पर भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर भाग में हुआ। प्राक् सैन्धव स्थल वह आधार है, जिनके साक्ष्यों पर सिन्धु सभ्यता के स्थानीय संस्कृतियों से क्रमिक उदगम को समझा जा सकता है।

पश्चिमोत्तर प्राक सैन्धव स्थल के अन्तर्गत **बलूचिस्तान** तथा **अफगानिस्तान** की बस्तियां आती हैं। इसके चार प्रमुख सांस्कृतिक वर्ग हैं- (i) झोब (ii) क्वेटा (iii) नाल तथा (iv) कुल्ली।

(i) झोब संस्कृतिः झोब संस्कृति के अन्तर्गत राना घुंडई, पॅरिआनो घुंडई, मुगल घुंडई, डाकाकोर आदि बस्तियां आती हैं। लाल मृदभांडों पर काले रंग के अलंकरण तथा कभी-कभी लाल रंग का पूरक रंग के रूप में प्रयोग तथा कठोर मुख-मुद्रा वाली मृद्मूर्तियां झोब संस्कृति की विशिष्टता है। इन पर इस संस्कृति की विशेषताओं के अन्तर्गत फ्लिन्ट निर्मित पत्ती के आकार के वाणाग्र, ब्लेड, वेधनी, हड्डी की सुई, तांबे की छड़ आदि का उल्लेख किया जा सकता है।

(ii) क्वेटा संस्कृतिः इस संस्कृति की विशेषताओं के अन्तर्गत **चर्ट के ब्लेड**, **हड्डी की वेधनियां**, **चक्की**, अलवस्तर के प्याले तथा मिट्टी की मूर्तियों का उल्लेख किया जा सकता है। इस संस्कृति के प्रमुख पुरास्थल किली गुल मुहम्मद, दंब साधत, पिराकदंब आदि हैं। **पांडुरंगी** (गुलाबी-सफेद) मृद्भांड जिन पर काले रंग से ज्यामितीय अलंकरण चित्रित किये गये हैं, जो क्वेटा संस्कृति की प्रमुख विशिष्टता है।

(iii) नाल संस्कृतिः नाल संस्कृति दक्षिण बलूचिस्तान में स्थिति है। यह संस्कृति नये रंगों के अलंकरण के कारण विशिष्ट है। नाल से प्राप्त मृद्भांड सफेद पट्टीधारी पांडु रंग के हैं। इस संस्कृति की विशेषताओं के अन्तर्गत **तांबे की मुहर**, **छिद्रित प्रस्तर बाट** तांबे के विभिन्न उपकरण तथा अर्द्ध **बहुमूल्य पत्थरों** के मनके आदि का उल्लेख किया जा सकता है। विशिष्ट पुरावशेषों में सेलखड़ी की एक मुहर, जिसमें गरुड़, सांप को पंजों में दबाये है, विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

(iv) कुल्ली संस्कृतिः इस संस्कृति के लोग अपने **मृतकों का दाह** संस्कार करते थे, वहीं **नाल संस्कृति** में पूर्ण **शवाधान** के साथ आंशिक शवाधान प्रचलित था। सिंधु-सभ्यता **सिंध**, **पंजाब**, **राजस्थान** एवं **हरियाणा** के क्षेत्रों में विस्तृत थी। सिंध में **आमरी कोट्टीजी** एवं **मोहनजोदड़ो**, पंजाब में **हड़प्पा सरायखोला** एवं जलीलपुर, **राजस्थान में कालीबंगन** एवं सोनी तथा हरियाणा में बनवाली एवं राखीगढ़ी प्रमुख प्राक् हड़प्पीय स्थल हैं।

दक्षिणी बलूचिस्तान में ही स्थित **कुल्ली संस्कृति** अनेक संदर्भो में विशिष्ट है। **मेही, रोजी और मजेरादंब** इस संस्कृति के प्रमुख स्थल हैं। इस संस्कृति के मृदभांडों पर (जो पांडु गुलाबी वर्ण के हैं) काले और लाल रंगों से चित्रित हैं। इस संस्कृति से सम्बंधित वस्तुओं में ब्लेड, सिल-बट्टे, बोतलनुमा पात्र, जामदानी साधारण तश्तरी, तांबे का दर्पण तथा क्लोटाइट सिस्ट के बने विभिन्न खानों वाले पात्र महत्वपूर्ण हैं।

कुल्ली संस्कृतियों के मकान प्रायः मिट्टी की ईंटों के बने होते थे तथा नींव में पत्थरों का प्रयोग किया जाता था। उदेल कुल्ली संस्कृति के मकान प्रायः पत्थरों के बने होते थे। मुगल छुंदई जैसे कुछ स्थलों से हमें किलेबन्दी के प्रमाण मिलते हैं।

आमरीः आमरी में प्राक् हड़प्पाकाल को **चार प्रवस्थाओं में** बांटा गया है। **पहली अवस्था** में किसी तरह के मकानों के **पुष्ट साक्ष्य** नहीं मिले हैं एवं मृदभांड, जो मिले हैं वे हस्तनिर्मित हैं। **दूसरी अवस्था में मिट्टी के बने** मकान एवं चाक निर्मित मृदभांड मिलते हैं। **तीसरी अवस्था** में मकान आयताकार तथा गारे व ईंट के बने हैं एवं मृदभांड के अलंकरण काफी सुन्दर और विकसित है। वहीं **चौथी अवस्था** में हमें काफी बड़े मकान मिलते हैं और मृदभांडों में और अधिक कोमलता दिखायी पड़ती है। ठीक इसी तरह कोटदीजी के प्राक् हड़प्पा स्तर से मकानों के साथ सामुदायिक अग्नि स्थल तथा उच्च तकनीक से बने चाक निर्मित मृदभांड मिले हैं।

आमरी में मिले मकानों के अवशेषों से पता चलता है कि लोग **पत्थर और मिट्टी की ईंटों के मकानों में** रहते थे तथा अनाज को रखने के लिए अनाज के कोठार (अन्नागार) का प्रयोग किए थे। इसके साथ ही वे मिट्टी के बर्तनों पर भारतीय कुबडे बैलों जैसे जानवरों के चित्र बनाते थे, जो पूर्ण विकसित हडप्पा काल में बहुत लोकप्रीय था।

हड़प्पा पूर्व सभ्यता का प्रसार संभवतः **गंगा घाटी** में भी हो गया था। मेहरगढ़ से प्राप्त हुई कृषि की प्रक्रिया धीरे-धीरे सम्पूर्ण सैन्धव तथा गंगा घाटी में फैल गई। हाल के उत्खननों से प्रतीत होता है कि अतरंजीखेड़ा से प्राप्त मृदमांडों पर सोथी संस्कृति का प्रभाव था।

सिंधु सभ्यता का निर्धारण काल

1. एच. हेरास (नक्षत्रीय आधार पर): 6000 ई.पू.
2. सरगान (मेसोपोटामिया) का अभिलेख : 3250-2750 ई.पू.
3. जॉन मार्शल : 3250-2750 ई.पू.
4. अर्नेस्ट मैके : 2800-2500 ई.पू.
5. एम.एस. वत्स : 3500-2700 ई.पू.
6. व्हीलर : 2500-1500 ई.पू.
7. फेयर सर्विस 2000-1500 ई.पू.
8. रेडियो कार्बन पद्धति : 2350-1750 ई.पू.
9. एन.सी.ई.आर.टी. : 2500-1800 ई.पू.
10. विकसित अवस्था : 2200-2000 ई.पू.
11. रोमिला थापर : 2300-1750 ई.पू.

अध्याय 4

सिंधु क्षेत्रों के बाहर की संस्कृतियां

दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व तक सिंधु क्षेत्रों के बाहर भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियां उद्भूत हुईं, जो **न तो शहरी थीं** और न ही **हड़प्पा संस्कृति** की तरह थीं, बल्कि **पत्थर एवं तांबे** के **औजारों का इस्तेमाल** इन संस्कृतियों की अपनी विशिष्टता थी। अत: यह संस्कृतियाँ ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों के नाम से जानी जाती हैं।

ताम्र पाषाणिक संस्कृति का वर्गीकरण

ताम्र पाषाण संस्कृतियां अपनी भौगोलिक स्थितियों के आधार पर पहचानी जाती हैं। इस प्रकार हम इन्हें निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत करते हैं।

1. राजस्थान में **बनास संस्कृति**
2. **कायथा संस्कृति**
3. **मालवा संस्कृति**
4. महाराष्ट्र की **जोर्वे संस्कृति**

इन संस्कृतियों से संबंधित स्थलों की खुदाई से निम्न पक्षों के बारे में विस्तृत अनुमान लगाया जा सकता है:

- बस्तियों का फैलाव
- अर्थव्यवस्था का ढांचा
- शव गृह और शवदाह के तरीके
- धार्मिक विश्वास

ताम्रपाषाणिक खुदाई स्थलों में इस संस्कृति से संबंधित वस्तुओं के साथ-साथ उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, पश्चिमी बंगाल, उडीसा एवं कर्नाटक के विभिन्न भागों में ताम्र/कांस्य की वस्तुओं के भंडार प्राप्त हुए हैं। साईपाई (इटावा जिला) उत्तर प्रदेश में ताम्र मत्स्यभाला तथा उसके साथ गेरुए चित्रित बर्तन प्राप्त हुए है। यहां पर गेरूए चित्रित बर्तन, काले एवं **लाल मृद्भांड**, चित्रित **धूसर मृदभांड** आदि संस्कृतियों का **वर्णन आवश्यक** है। यह संस्कृतियां बर्तनों की विशिष्ट किस्मों के आधार पर निर्धारित की जाती हैं।

गंगा-यमुना दोआब में सौ से अधिक स्थानों पर विशिष्ट प्रकार के बर्तन प्राप्त हुए हैं, जिन्हें **गेरूए चित्रित बर्तनों** (OCP) की **संस्कृति से संबद्ध** माना जाता है। गौरिक भांड एक लाल **अनुलेपित मृद्भांड** है, जिसमें बहुत से मूठदार कलश दिखाई देते हैं।

गेरूए चित्रित बर्तनों की संस्कृति के बाद काले एवं लाल मृद्भांडों की संस्कृतियां तथा चित्रित धूसर मृद्भाडों की संस्कृतियां क्रमश: आती हैं। उत्तर भारत में हरियाणा तथा ऊपरी गंगा घाटी में चित्रित धूसर मृद्भांड के स्थलों की बड़ी संख्या मिलती है। लोहे का प्रार्दुभाव सर्वप्रथम चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति मे होता है, जो कि उत्तरी काले पॉलिश किए मृद्भाडों की संस्कृति के नाम से जानी जाती है।

1. गेरुए चित्रित बर्तनों की संस्कृति

यह संस्कृति मुख्यत: **पश्चिमी उत्तर प्रदेश** के नदियों के तटों पर विस्तृत थी। **मायापुर (सहारनपुर)** से लेकर साई **पई (इटावा)** तक लगभग 110 स्थल इस विशिष्ट संस्कृति के प्राप्त हुए हैं। इसके क्षेत्र आकार में छोटे हैं तथा कई क्षेत्रों (बिसौली, साईपई) में टीलों की ऊंचाई काफी कम है।

इन बस्तियों के बीच की दूरी 5 से 8 कि.मी. के बीच पायी गयी है। **अतरंजीखेड़ा** से प्राप्त पुरातात्विक वानस्पतिक अवशेषों से पता चलता है कि इन क्षेत्रों में धान, जौ, दालें आदि की फसल उगाई जाती थीं। यह संस्कृति 2000 ई. पूर्व से 1500 ईसा पूर्व के बीच की मानी गयी है।

दोआब के ऊपरी भाग में भी गेरुए चित्रित बर्तनों की संस्कृति के साक्ष्य मिले हैं। इस क्षेत्र में गेरूए चित्रित बर्तनों वाले लोगों के उदय के साथ ही बस्ती प्रारंभ होती है। **जोधपुर एवं नोह** (राजस्थान) में गेरुए चित्रित बर्तनों के सबसे अधिक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

2. काले एवं लाल मृद्भांड संस्कृति

काले एवं लाल मृद्भांड पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार तथा पश्चिमी बंगाल में खुदाई से प्राप्त हुए हैं। 1960 के दशक में अतरंजीखेड़ा में खुदाई के दौरान एक विशिष्ट प्रकार के मृद्भांड प्रकाश में आए, जो गेरुए चित्रित बर्तनों एवं **चित्रित धूसर मृद्भांडों** के स्तरों के बीच के थे। इस स्तर के बर्तनों को काले एवं लाल मृद्भांड कहा गया। हालांकि **जोधपुर एवं नोह** से इसी प्रकार स्तरीय क्रम प्रकाश में आये हैं किंतु अहिच्छत्र, हस्तिनापुर एवं आलमगीरपुर में काले एवं लाल मृद्भांड चित्रित धूसर मृद्भांड़ों के साथ ही प्राप्त हुए हैं।

अतरंजीखेड़ा तथा **दक्षिणी राजस्थान में गिलुंद** तथा **आहर** में मिले काले एवं लाल मृद्भांडो के स्वरूप, बनावट एवं चमक के आधार पर समानता है। इस संस्कृति का समय 2900 ईसा पूर्व के लेकर ई. युग की आरंभिक शताब्दियों तक फैला हुआ था।

3. चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति

वर्ष 1946 ई. में अहिच्छत्र में चित्रित धूसर मृद्भाडो की खोज के बाद से उत्तरी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में ये बड़ी संख्या में प्रकाश में आये हैं। इनमें से 30 स्थानों की खुदाई हुई हैं, जिसमें मुख्य रोपड़ (पंजाब), **भगवानपुरा,** (हरियाणा), नोह (राजस्थान), **आलमगीरपुर, अहिच्छत्र, हस्तिनापुर, अतरंजीखेड़ा, जखेड़ा तथा मथुरा** (उत्तर प्रदेश) हैं।

अध्याय 5

वैदिक सभ्यता

वैदिक काल (1500–1000 ई.पू.)

वैदिक साहित्य द्वारा भारतीय इतिहास के जिस युग का ज्ञान होता है उसे **वैदिक काल** कहते हैं। वैदिककालीन सभ्यता का उत्कर्ष **सिंधु सभ्यता के पतन** के पश्चात् हुआ। कुछ विद्वानों के अनुसार आर्यों के आक्रमण के कारण ही सिंधु सभ्यता का अंत हुआ था।

वैदिक सभ्यता के निर्माता अपने को आर्य तथा अपने शत्रुओं को दास अथवा दस्यु कहते थे। दास अथवा दस्यु के संबंध में कुछ जानकारी वैदिक साहित्य में उनके लिए प्रयुक्त कुछ विशेषणों से मिलती है। इन विशेषणों के अनुसार वे काले रंग के **लिंगपूजक** और **चिपटी नाक** वाले थे। उनकी बोली समझ में नहीं आती थी। वे यज्ञ नहीं करते थे, उनके पास पुर थे, उनका सरदार शम्बर पत्थर की 100 पूरों का स्वामी था। इनमें से अधिकांश विशेषताएं सिंधु घाटी सभ्यता के निर्माताओं पर लागू होती हैं। कुछ विद्वान मानते हैं कि इन्हीं के लिए दस्यु तथा दास शब्द प्रयुक्त किये गये हैं।

मोहनजोदड़ो को छोड़कर कहीं भी सिंधु घाटी सभ्यता के नगरों के अवशेषों में हिंसा और आक्रमण के कोई संकेत नहीं मिलते हैं। सिंधु घाटी सभ्यता का अंत लगभग 1750 ई. पू. से 1500 ई. पू. के आस-पास माना जाता है। इस प्रकार वैदिक काल का विस्तार लगभग 1500 ई.पू. से लगभग 500 ई.पू. तक मान सकते हैं।

ऋग्वेद के प्रमाण सप्त सिंधु अर्थात सात नदियों की भूमि वाले भौगोलिक क्षेत्र से सम्बद्ध है। यह क्षेत्र पंजाब और निकटवर्ती हरियाणा का है। किन्तु ऋग्वेद के भूगोल में गोमती के मैदान, दक्षिणी अफगानिस्तान और दक्षिणी जम्मू कश्मीर भी सम्मिलित है।

आर्यों का विस्तार

भारत में आने के पूर्व सर्वप्रथम आर्य ईरान पहुंचे। वहां हिन्द-ईरानी लोगों ने काफी समय तक निवास किया। विश्व की सबसे प्राचीन कृति ऋग्वेद से ही हमें आर्यों के विषय में जानकारी मिलती है। कवियों अथवा ऋषियों के विभिन्न परिवारों द्वारा अग्नि, मित्र, वरुण आदि देवताओं की स्तुति में रची गयी प्रार्थनाओं का ही ऋग्वेद में संकलन है। ऋग्वेद में 10 मण्डल हैं, जिनमें से दो से सात तक के मण्डल सबसे प्राचीन हैं। पहला और दसवां मण्डल सम्भवत: बाद में जोड़ा गया था।

ईरानी भाषा के सबसे प्राचीन ग्रंथ **'अवेस्ता'** और **ऋग्वेद** में अनेक समानताएं हैं। दोनों में न केवल अनेक देवताओं के बल्कि सामाजिक वर्गों के नाम भी समान हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि भारतीय आर्य तथा ईरानी आर्य किसी समय एक ही स्थान पर इकट्ठे रहते थे। वह स्थान ईरान अथवा भारत के पास हो सकता है, जहां से आर्यों की एक शाखा ईरान को, दूसरी भारत को और तीसरी यूरोप को गयी होगी।

इराक से प्राप्त **1600 ई.पू.** के कस्सी अभिलेखों में और ई.पू. चौदहवीं सदी के मितन्नी अभिलेखों में जिन आर्य नामों का उल्लेख मिलता है, उनसे सूचित होता है कि आर्यों की एक ईरानी शाखा पश्चिम की ओर चली गयी।

भारत में आर्यों का आगमन **1500 ई.पू.** के कुछ पहले हुआ। उनके आगमन के विषय में स्पष्ट एवं ठोस पुरातात्त्विक प्रमाण नहीं मिलते। सम्भवत: वे कोटरवाली कुल्हाड़ियां, कांसे की कटारें और खड्ग का इस्तेमाल करते थे। पश्चिमोत्तर भारत से इस प्रकार के हथियार प्राप्त हुए हैं।

आर्यों का आरंभिक निवास पूर्वी अफगानिस्तान, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती भू-भाग में था। ऋग्वेद में **अफगानिस्तान की कुभा (काबुल)** जैसी कुछ नदियों के **और सिंधु** तथा इसकी पांच सहायक नदियों का उल्लेख मिलता है। सिंधु ऋग्वैदिक आर्यों की सबसे प्रमुख नदी थी और उल्लेख बार-बार किया है गया है। दूसरी नदी जिसका उन्होंने कई बार उल्लेख किया है 'सरस्वती' थी, जो अब राजस्थान के रेगिस्तान में लुप्त हो गयी है। झेलम (वितस्ता), चिनाब (अश्किनी), रावी (पुरुष्णी) तथा सतलज (शतुद्री) अन्य नदियां थीं। भारत के जिस प्रदेश में आर्य लोग सर्वप्रथम आबाद हुए उसे 'सप्तसिंधु' प्रदेश कहा गया है।

ऋग्वेद के महत्वपूर्ण शब्द

1.	राज्य	1 बार	2.	विश	170 बार
3.	जन	275 बार	4.	गंगा	1 बार
5.	शूद्र	1 बार	6.	समिति	9 बार
7.	सभा	8 बार	8.	यमुना	3 बार
9.	कृषि	24 बार	10.	विदथ	22 बार

प्रारंभिक व्याख्याओं के अनुसार इंडो-आर्यों के स्थानांतरण का सिद्धांत इस तथ्य पर आधारित है कि वे पश्चिम एशिया से भारतीय उप-महाद्वीप में आये थे। ये प्रवासी वेदों के रचयिता माने जाते हैं इसलिए इनको वैदिक जन कहा गया है। इस ऐतिहासिक व्याख्या के अनुसार भारत में **आर्यों का आगमन** कई चरणों में हुआ। यहां के स्थानीय दास-दस्युओं से इनका संघर्ष हुआ। चूंकि प्राचीन ईरानी साहित्य में भी दासों के उल्लेख मिलते हैं, इसलिए प्रतीत होता है कि वे आरंभिक आर्यों की ही एक शाखा थे। ऋग्वेद से ज्ञात होता है कि दिवोदास, जो भरत कुल का था **शंबर को हराया था**, के नाम के साथ 'दास' शब्द जुड़ा है।

अध्याय 6

महाजनपदों से नंद तक राज्य निर्माण

छठीं शताब्दी ई.पू. से लेकर चौथी शताब्दी ई.पू. के मध्य तक भारतीय इतिहास में अनेक महत्वपूर्ण घटनाऐं घटीं। इस युग में जहां एक ओर **महाजनपदों** का उदय हुआ तथा **सामाजिक-आर्थिक** और **राजनीतिक जीवन** में बदलाव आया, तो दूसरी तरफ **धार्मिक क्षेत्र** में उल्लेखनीय **क्रान्ति** हुई। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप पुरानी धार्मिक मान्यताऐं बदल गईं और नये धर्मों का उदय हुआ। इसी अवधि में मगध में **साम्राज्यवाद** का विकास हुआ, जिसने अन्ततः मौर्य साम्राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

उत्तर वैदिक काल में कबीलाई राज्यों की जगह क्षेत्रीय राज्य स्थापित करने की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। उतर वैदिक काल में हमें विभिन्न जनपदों का अस्तित्व दिखाई देता है। इस काल तक वर्तमान पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा पश्चिमी बिहार (झारखंड) में लोहे का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाने लगा था। लौह तकनीक ने लोगों के भौतिक जीवन में बड़ा परिवर्तन उत्पन्न कर दिया तथा इससे स्थायी जीवन-यापन की प्रवृत्ति सुदृढ़ हो गयी। **कृषि, व्यापार, उद्योग, वाणिज्य** आदि के विकास के चलते छोटे-छोटे जनों का स्थान जनपदों ने ग्रहण कर लिया जो ई. पू. छठीं शताब्दी तक आते-आते जनपद, महाजनपदों के रूप मे विकसित हो गये।

महाजनपदों का उदय

महाजनपदों के उदय के विषय में जानकारी वैदिक तथा बौद्ध साहित्य से प्राप्त होती है।

वैदिक साहित्यः वैदिक साहित्य ऋग्वेद में अनुष्ठान के तरीकों का उल्लेख है। ऋग्वेद में जनों का उल्लेख आता है, परन्तु जनपदों का नहीं है। जनपद शब्द वैदिक संहिताओं में भी 'जनपद' शब्द का प्रयोग नहीं मिलता है। सर्वप्रथम इसका प्रयोग ब्राह्मण ग्रंथों में हुआ है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि जनपदों का उदय ब्राह्मणकाल में हुआ। महात्मा बुद्ध के समय तक आते-आते इन जनपदों का पूर्ण विकास हो गया। **डॉ. वासुदेव शरण** अग्रवाल के अनुसार **"लगभग एक सहस्त्र ईस्वी पूर्व से पांच सौ ईस्वी पूर्व तक के युग को भारतीय इतिहास में जनपद या महाजनपद युग कहा** जा सकता है।" जिस प्रदेश में एक जन स्थायी रूप से बस गया, वही उसका जनपद (राज्य) हो गया।

प्रारम्भ में जनपद में किसी एक वर्ग विशेष के मनुष्य ही रहते थे। अतः उनका जीवन एक ही जातीय, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परम्परा के ऊपर संगठित था, परन्तु कालान्तर में अन्य वर्ग एवं जातियों के लोग भी आकर उनके जनपदों में बसने लगे। इससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान तो हुआ, परन्तु बहुत समय तक राजसत्ता एकमात्र आदि जन के प्रतिनिधियों के हाथ में रही। प्रत्येक जनपद में बहुसंख्यक गाँव और नगर होते थे।

काशिकाकार इतिहासकार ने लिखा है कि ग्रामों का समुदाय ही जनपद है। धीरे-धीरे जनपदों की संख्या कम होने लगी। छोटे जनपद बड़े जनपदों में परिवर्तित होने लगे। इस भांति देश में महाजनपद काल का उदय हुआ।

बौद्ध साहित्यः संघ के नियमों को बताने वाली विनय पिटक, बुद्ध के उपदेशों का संग्रह सुत्त पिटक तथा अलौकिक समस्याओं का उल्लेख करने वाली अभिधम्म पिटक से महाजनपद के विषय में जानकारी मिलती है। बुद्ध के पूर्व जन्मों के विषय को बताने वाली जातक कथाएं सुत्त पिटक का अंग है, जो उस समय के समाज की स्पष्ट जानकारी प्रदान करती है।

महाजनपद

महाजनपद नई राजनैतिक-भौगोलिक इकाइयां, जिनमें गहपति, व्यापारी तथा शासक एवं शासित के बीच संबंध के नए प्रतिमान दिखाई पडे, महाजनपद कहलाए। महाजनपद का तात्पर्य मगध, कौशल आदि ऐसे विशाल जनपदों से था, जिनपर शक्तिशाली राजा अथवा अभिजात वर्ग राज करते थे।

बौद्ध ग्रंथों में सोलह महाजनपदों के विषय में उल्लेख मिलता है। बौद्ध ग्रथों में जहां भी बुद्ध का उल्लेख मिलता है वहां बार-बार इन महाजनपदों की मुख्य बस्तियों का भी उल्लेख प्राप्त होता है।

महात्मा बुद्ध के आविर्भाव के पूर्व भारतवर्ष **16 महाजनपदों** में विभक्त था। बौद्ध ग्रंथ **अंगुत्तरनिकाय, जो कि सुत्त पिटक का अंग है,** में इनके नाम निम्न प्रकार मिलते हैं-1. अंग, 2. मगध, 3. काशी, 4. कोशल, 5. वज्जि, 6. मल्ल, 7. चेदि, 8. वत्स, 9. कुरु, 10. पांचाल, 11. मत्स्य, 12. शूरसेन, 13. अस्सक, 14. अवन्ति, 15. गांधार, 16. कम्बोज।

महावस्तु में इसी प्रकार की सूची मिलती है, लेकिन इसमें गांधार और कम्बोज के स्थान पर शिवि (पंजाब या राजपूताना) तथा दर्शाण (मध्य भारत) का उल्लेख किया गया है। भगवती सूत्र (जैन ग्रंथ) में भी 16 राज्यों का जिक्र किया गया है- 1.अंग, 2. बंग, 3. मगध 4. मलय, 5. मालव, 6. अच्छ, 7. वच्छ, 8. कच्छ, 9. पाघ, 10. लाघ, 11. वज्जि, 12.मोलि, 13. काशी, 15. कोशल, 15. अवा तथा 16. सम्मुतर।

दोनों सूचियों में 1. अंग, 2. मगध, 3. वत्स, 4. वज्जि, 5.काशी, 6. कोशल समान हैं। जैन सूची में मालवा और बौद्ध सूची के क्रमशः अवन्ति और मल्ल का उल्लेख है। परन्तु शेष जनपदों में अन्तर है। जैन सूची बाद की प्रतीत होती है। बौद्ध ग्रंथ में उल्लिखित सभी राज्य सर्वसत्ता सम्पन्न गण अथवा संघ राज्य थे। इनमें वज्जि, मल्ल तथा शूरसेन आदि प्रमुख गणराज्य थे और मगध, वत्स, अवन्ति तथा कौशल आदि प्रमुख राजतंत्र थे। राजतंत्रों में कुलीन तन्त्रात्मक व्यवस्था थी।

अध्याय 7

मौर्य साम्राज्य

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

भारत पर अलेक्जेंडर के आक्रमण के समय, नंद वंश के शासन काल में मगध साम्राज्य दुर्जेय शक्ति के रूप में उभरा, जिसे मौर्य शासकों ने अपने शासनकाल के दौरान चरम पर पहुंचाया था।

मौर्यकालीन इतिहास, सभ्यता और संस्कृति की जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त होती है। इन स्रोतों में साहित्यिक साक्ष्य, विदेशी वृतांत तथा पुरातात्त्विक प्रमाण महत्त्वपूर्ण हैं। इन स्रोतों का विवरण इस प्रकार है:

1. साहित्यिक स्रोत

मौर्यकालीन इतिहास के संबंध में विविध प्रकार के साहित्यिक ग्रंथों से जानकारी मिलती है। ब्राह्मण, बौद्ध तथा जैन साहित्य इस वंश के इतिहास पर प्रचुर प्रकाश डालते हैं। ब्राह्मण साहित्य में पुराण,बौद्ध ग्रथों में दीपवंश, महावंश, महावंशटीका, महाबोधिवंश और जैन सहित्यों में भद्रबाहु का कल्पसूत्र तथा हेमचन्द्र का परिशिष्टपर्वन प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त कौटिल्य का अर्थशास्त्र एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इन साहित्यिक स्रोतों का अलग-अलग विवरण प्रस्तुत करना समीचीन प्रतीत होता है।

पुराण: पुराणों से मौर्यों के विषय में अनेक महत्वपूर्ण जानकारी हासिल होती है। विष्णु पुराण से विदित होता है कि मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त का जन्म नंद राजा की **मुरा** नामक पत्नी से हुआ था।

ब्राह्मण ग्रंथ चन्द्रगुप्त मौर्य को **शूद्र या नीच कुल** में उत्पन्न बताते हैं। पुराणों में ऐतिहासिक घटनाओं के साथ-साथ काल्पनिक प्रसंगों का भी वर्णन किया गया है।

मौर्य साम्राज्य के प्रांत

क्र.	प्रांत	राजधानी	क्र.	प्रांत	राजधानी
1.	उत्तरापथ	तक्षशिला	2.	अवन्ति	उज्जयिनी
3.	कलिंग	तोसली	4.	दक्षिणापथ	सुवर्णगिरि
5.	प्राशी	पाटलिपुत्र			

अर्थशास्त्र: मौर्यवंश के प्रशासन संबंधी जानकारी का साक्ष्य हमें कौटिल्य के अर्थशास्त्र से प्राप्त होता है। इसका ज्ञान **सर्वप्रथम विद्वानों को 1909 ई.** में हुआ। सम्पूर्ण अर्थशास्त्र को **15 अधिकरण एवं 180 प्रकरणों** में विभक्त किया गया है। इस ग्रंथ से न केवल राजनैतिक

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

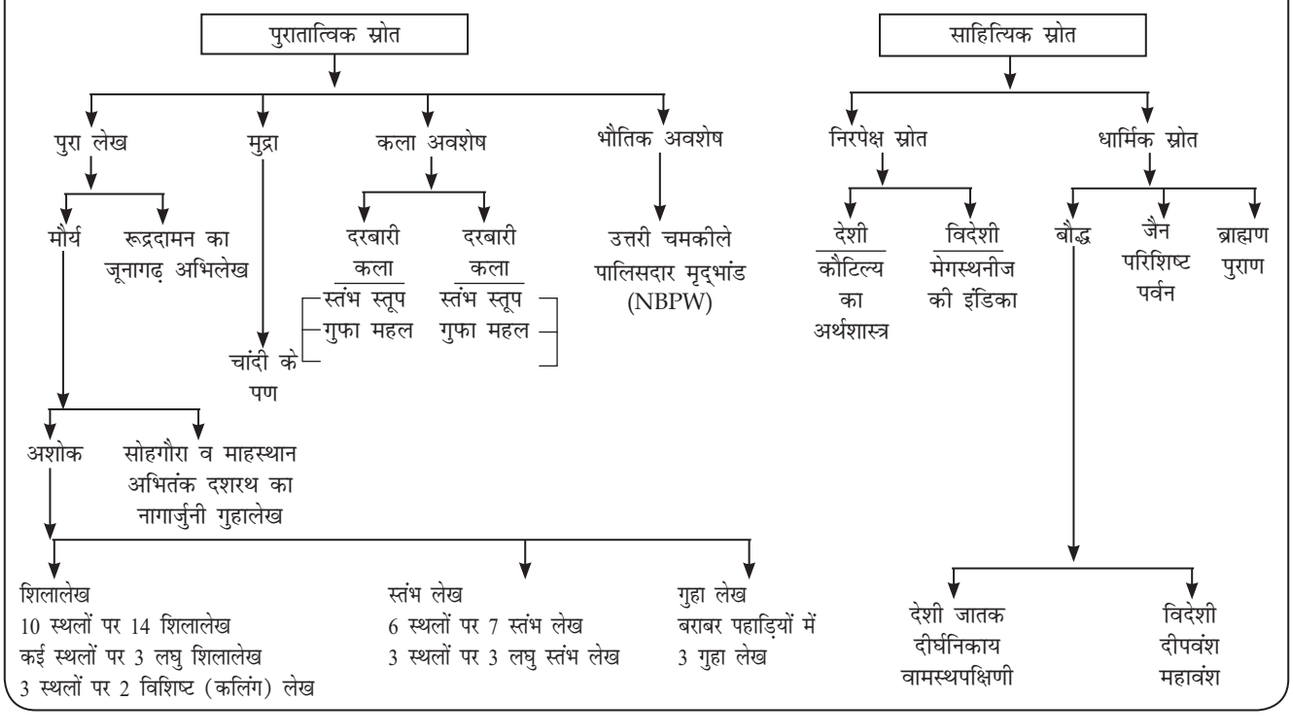

अध्याय 8

मौर्योत्तर भारत

मौर्य राजाओं के काल में ही भारत का राजनीतिक परिदृश्य **विकेन्द्रीकरण का शिकार** हो गया। ऐसी स्थिति में दो तरह की प्रवृत्तियां सामने आईं। (1) प्रवृत्ति के तहत आंतरिक शक्तियां पारस्परिक संघर्षों में उलझी रहीं और **शुंग, कण्व** एवं सातवाहन जैसे राजवंशों ने उपमहाद्वीप के अधिकांश भू-भाग पर शासन किया। (2) **प्रवृत्ति** को प्रथम प्रवृत्ति का ही **तार्किक परिणाम** माना जा सकता है, जिसके तहत पश्चिमोत्तर क्षेत्र में बाह्य शक्तियों की गतिविधियां सक्रिय रूप से दिखाई दीं। सर्वप्रथम बैक्ट्रिया के यवन, उसके बाद पार्थियन, फिर शक और अंततः कुषाणों ने भारत पर सफल आक्रमण किए। इस प्रकार मध्य एशिया के साथ संपर्क के कारण आर्थिक क्रिया-कलापों एवं सांस्कृतिक साहचर्य का नवीन रूप उपस्थित हुआ।

मौर्योत्तर काल के स्त्रोत

मौर्योत्तर काल के इतिहास के विषय में जानने के लिए साहित्यिक और अभिलेखिय स्त्रोत महत्वपूर्ण है।

साहित्यिक स्त्रोतः इस अवधि के अध्ययन के लिए पतंजलि के **महाभाष्य, दिव्यावदान, पुराण, कालिदास** के **मालविकाग्निमित्र** तथा बाणभट्ट के हर्षचरित प्रमुख है। इसके अलावा **ग्रीक** और **लैटिन** स्त्रोत से इस अवधि के शासकों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। इसके साथ ही पाली ग्रंथ मिलिंद-पन्हा से इस अवधि के यवन राजा मिनंडर और बौद्ध धर्म के बारे में जानकारी मिली है।

अभिलेखिय स्त्रोतः अयोध्या, विदिशा और भरहुत से प्राप्त शिलालेखों से इस अवधि के शासकों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। इसके साथ ही उत्तर भारत से प्राप्त सिक्कों से उस समय के शासको के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। इन सिक्कों पर उस समय के शासकों के नाम अंकित हैं। इस अवधि के राजनीतिक इतिहास के विषय में जानकारी मध्य एशिया के स्त्रोतों से होती है। खरोष्ठी लिपि में लिखे शिलालेख गंधार में संख्या में पाए गए हैं और इसके साथ ही मध्य एशिया से कई खरोष्ठी दस्तावेज प्राप्त किए गए हैं।

शुंग इतिहास के स्रोत

1. **साहित्यः** गार्गी संहिता, महाभाष्य, दिव्यावदान, मालविकाग्निमित्र, हर्षचरित, लामा तारानाथ का विवरण
2. **अभिलेखः अयोध्या, विदिशा** (भिलसा)
3. **सिक्केः** कौशाम्बी, अयोध्या, अहिच्छत्र तथा मथुरा से प्राप्त

शुंग राजवंश (185 ई.पू.-75 ई.पू.)

पुष्यमित्र शुंग इस राजवंश का **संस्थापक** था, जिसने अंतिम **मौर्य** राजा की हत्या कर मगध के सिंहासन पर अधिकार किया। इसकी पुष्टि कन्नौज के हर्षवर्धन के दरबारी **कवि बाण** (बाणभट्ट) द्वारा की गई है। शुंग ब्राह्मण थे और कभी-कभी यह आरोप लगाया जाता है कि पुष्यमित्र ने ब्राह्मण विद्रोह के रूप में मौर्य राजा की हत्या की। किंतु यह आरोप अब निराधार साबित हो चुका है कि मौर्य शासक असहिष्णु थे क्योंकि पुष्यमित्र स्वयं ब्राह्मण था और मौर्यकाल में सेनापति जैसे उच्च पद पर नियुक्त था।

पाणिनि के अनुसार शुंग भारद्वाज गोत्र के थे। **कालिदास के मालविकाग्निमित्र** में पुष्यमित्र के पुत्र **अग्निमित्र** का वर्णन है, जिसे बिम्बिका कुल से संबंधित माना गया है।

पुष्यमित्र द्वारा मौर्य सिंहासन पर अधिकार का उल्लेख पुराणों और बाणभट्ट की हर्षचरित में है। **राजनैतिक महत्वाकांक्षा** और आंतरिक दुर्बलता को ही **मौर्य-साम्राज्य** के पतन का कारण माना जाता है। डा. हरप्रसाद शास्त्री ने शुंगों को **पारसी** तथा दिव्यावदान नामक पुस्तक ने मौर्य माना है। **परंतु वास्तविकता** यह है कि **शुंग ब्राह्मण** थे। क्योंकि कालिदास ने उन्हें बैम्बिक वंशीय, बौधायन सूत्र ने बैम्बिक कश्यप गोत्रिक तथा तारानाथ ने ब्राह्मण राजा कहा है।

गार्गी संहिता और युग पुराण से यह पता चलता है कि भारत पर हुए **यवन आक्रमण** के प्रतिरोध की शक्ति मौर्य राजाओं में नहीं थी। आक्रमणकारी पश्चिमोत्तर क्षेत्र के अधिकांश भाग पर अपना अधिकार स्थापित कर चुके थे, यहां तक कि उनकी प्रतिध्वनि अयोध्या, काशी एवं पाटलिपुत्र में भी सुनाई पड़ रही थी। परंतु पुष्यमित्र ने उनका सामना किया और एक मजबूत साम्राज्य की स्थापना की।

उत्तर भारत के एक बड़े हिस्से में उसका साम्राज्य विस्तृत था। उनका साम्राज्य सम्पूर्ण गंगा घाटी, नर्मदा नदी क्षेत्र एवं उत्तरी दक्कन में विदर्भ और बरार तक विस्तृत था। कुछ समय के लिये सिन्धु तट क्षेत्र भी उसके साम्राज्य के अन्तर्गत आते थे।

पाटलिपुत्र उसके शासन का मुख्य क्षेत्र था, जबकि दूसरा प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र **विदिशा** में था। **अयोध्या अभिलेख** से पता चलता है कि पुष्यमित्र ने **दो बार अश्वमेध** यज्ञ किये एवं ब्राह्मण धर्म को बढ़ावा दिया। उसके एक अश्वमेघ यज्ञ के प्रधान पुरोहित पतंजलि थे।

पतंजलि के महाभाष्य, 'गार्गी संहिता' तथा **'मालविकाग्निमित्र'** से पता चलता है कि पुष्यमित्र ने यवनों को परास्त किया, जो उसकी महान उपलब्धि थी। उसने विदर्भ राज्य के शासक यज्ञसेन से कुपित होकर विदर्भ को दो भागों में बांट दिया और एक भाग माधवसेन तथा दूसरा भाग यज्ञसेन को देकर उनसे अपनी अधीनता स्वीकार करवा ली। कलिंग राज्य से भी पुष्यमित्र का संघर्ष हुआ था। पुष्यमित्र **ब्राह्मणवादी** था, इसलिये कहा जाता है कि उसने **बौद्धों पर काफी** अत्याचार किये। परंतु यह भ्रामक मालूम पड़ता है। क्योंकि उसी के काल में **भरहुत** एवं

अध्याय 9

संगम काल

संगमयुगीन संस्कृति

पाषाण युगीन संस्कृति के पश्चात् **सुदूर दक्षिण में महापाषाण संस्कृति** का उद्भव हुआ। इस संस्कृति के अनेक पुरातात्विक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। खारवेल के एक पुराने शिलालेख में तमिल देश के राज्यों का उल्लेख मिलता है। खारवेल ईस्वी पूर्व दूसरी सदी के पूर्वार्द्ध में कलिंग का शासक था। ऐसा कहा जाता है कि अपने शासन के ग्यारहवें वर्ष (ईस्वी पूर्व 165) में उसने तमिल राज्य के **113 वर्ष पुराने** तमिल देश **'संघात्मक'** को नष्ट कर दिया। इसके अतिरिक्त मेगास्थनीज के विवरण तथा अशोक के अभिलेख में भी इसका उल्लेख मिलता है।

इस संस्कृति के लोग **लोहे के** प्रयोग से **परिचित थे** और **काले तथा लाल मृदभाण्ड** का प्रयोग करते थे। इस संस्कृति के लोग अपनी विशिष्ट प्रकार की कब्रगाह के लिए प्रसिद्ध थे, जिनको **'महापाषाण'** कहते हैं। ये कब्रगाह बड़े-बड़े पत्थर के टुकड़ों से घिरे होते थे। इन कब्रों में न केवल दफनाए गये लोगों के **अस्थि पंजर**, बल्कि मिट्टी के बर्तन और **लोहे की वस्तुएं** भी मिली हैं।

इस संस्कृति में शवों के साथ वस्तुओं को कब्रों में दफनाने की प्रथा थी जिससे ज्ञात होता है कि मृत व्यक्तियों को उनकी आवश्यकता परलोक में पड़ती होगी। ये वस्तुयें उनके **जीविकोपार्जन के स्रोतों** के बारे में संकेत देती हैं। हम उनमें बाणाग्र, बरछे की नोक, फावड़े तथा हंसिया पाते हैं। ये सब चीजें लोहे की बनी होती थीं। लोहे के त्रिशूल भी महापाषाण कब्रों में पाये गये हैं।

संगम साहित्य से भी सुदूर दक्षिण के तीन शक्तिशाली **राज्यों चेर, पाण्ड्य तथा चोल शासकों** के आरंभिक इतिहास एवं उस समय की संस्कृति का उल्लेख मिलता है।

संगमकालीन राजकीय चिन्ह

चेर	:	धनुष
चोल	:	बाघ या चीता
पांड्य	:	मछली

दक्षिण भारत का **क्रमबद्ध इतिहास संगम साहित्य** (तीसरी या चौथी सदी के साहित्य) से प्राप्त होता है। 'संगम' एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ **'सभा'** होता है। इस सभा में तमिल कवि या विद्वान एकत्र होते थे। प्रत्येक कवि अथवा लेखक अपनी रचनाओं को संगम के समक्ष प्रस्तुत करता था तथा इसकी स्वीकृति प्राप्त हो जाने के बाद किसी भी रचना का प्रकाशन सम्भव था।

दक्षिण भारत में पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में कुल **तीन संगम आयोजित** किये गये। इन संगमों में संकलित साहित्य को ही **'संगम साहित्य'** के नाम से जाना जाता है। संगम साहित्य विभिन्न आठ संग्रह ग्रंथों में समाहित मिलता है। इन संगमों का विवरण इस प्रकार है-

प्रथम संगम: प्रथम संगम का आयोजन पाण्ड्यों की प्राचीन राजधानी **मदुरा** में हुआ था। इसकी अध्यक्षता **अगस्त्य ऋषि** ने की। अगस्त्य ऋषि को ही दक्षिण में आर्य सभ्यता के प्रचार का श्रेय प्रदान किया जाता है। इस संगम में 549 विद्वानों ने भाग लिया। इस प्रथम संगम को 89 पाण्ड्य शासकों का संरक्षण प्राप्त था। इस संगम के कार्यकाल में 4499 विद्वानों को अपनी रचनाएं प्रकाशित करने की अनुमति दी गयी थी।

यह संगम 4,400 वर्षों तक चला। इसमें अक्कतिमय परिपादल, मदुनरै इत्यादि ग्रंथों का संकलन किया गया। इनमें कोई भी ग्रंथ आज उपलब्ध नहीं है। मदुरा नगर के समुद्र में विलीन हो जाने के कारण प्रथम संगम भी समाप्त हो गया। इस संगम के सदस्यों में प्रमुख थे-तिरिपुरमेरिध, मुरुगवल तथा मुदिनागरायर।

द्वितीय संगम: मदुरा के पतन के पश्चात् **पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण** में दूसरा संगम नये **नगर कपाटपुरम्** अथवा **अलैवे** में आयोजित किया गया। इस संगम की अध्यक्षता भी **ऋषि अगस्त्य** ने की। बाद में उनका स्थान उनके शिष्य तोलकाप्पियर ने लिया। इस संगम में तमिल भाषा के 49 विद्वानों ने भाग लिया। इस द्वितीय संगम को 59 पाण्ड्य शासकों ने संरक्षण प्रदान किया। परम्परानुसार इस संगम में 3700 कवियों को अपनी रचना प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की गयी। यह संगम 3700 वर्षों तक चला।

संगमकालीन प्रमुख स्थल

1.	वंजी या करूर	:	चेर राज्य की प्रशासनिक राजधानी
2.	मुसिरी	:	चेर राज्य की तटीय (बंदरगाह) राजधानी
3.	उरैयुर	:	चोल राज्य की प्रशासनिक राजधानी
4.	कावेरी पट्टनम	:	चोल राज्य की तटीय राजधानी
5.	मदुरई	:	पाण्ड्य राज्य की प्रशासनिक राजधानी
6.	कोरकई	:	पाण्ड्य राज्य की तटीय राजधानी
7.	कांची	:	पल्लवों की राजधानी
8.	पट्टिनम	:	समुद्र किनारे का नगर
9.	सलाई	:	मगर की मुख्य सड़क
10.	टेरु	:	नगर की मुख्य गली
11.	चेरी	:	उपनगर

इस संगम के दौरान जिन ग्रंथों की रचना हुई, उनमें अकतियम, मापुरानम, भूतपुरानम, व्यालमलय, तोलकाप्पियम इत्यादि उल्लेखनीय हैं। इस संगम द्वारा संकलित ग्रंथों में एकमात्र **'तोलकाप्पियम'** ही अवशिष्ट है। यह पुस्तक तमिल व्याकरण की विख्यात पुस्तक है। इस ग्रंथ की रचना **ऋषि अगस्त्य** के एक शिष्य **तोलकाप्पियर** ने की थी। द्वितीय

अध्याय 10

गुप्त साम्राज्य

भारतीय इतिहास में गुप्त काल का इतिहास श्रेष्ठतम स्थान रखता है। कुषाण साम्राज्य के पतन के पश्चात् उत्पन्न हुई **राजनीतिक अव्यवस्था** और **अस्थिरता को समाप्त** करके गुप्त सम्राटों ने भारत को सुव्यवस्था और राजनीतिक स्थिरता प्रदान की।

प्राय: **200 वर्षों** तक गुप्त सम्राटों ने सम्पूर्ण उत्तर भारत और उत्तर-पश्चिम के प्रदेशों को राजनीतिक एकता प्रदान की, विदेशी सत्ता से भारत को मुक्त किया, छोटे-छोटे राजतंत्र, कुलीनतंत्र और जनतंत्रीय राज्यों को नष्ट कर दिया और एक बार फिर साम्राज्यवादी धारणा को जीवित किया। एक के बाद एक योग्य और शक्तिशाली गुप्त सम्राटों ने सम्पूर्ण उत्तर भारत को एक शासन-सूत्र में बांध दिया।

इन्होंने दक्षिण भारत के वाकाटक और पल्लव शासकों की नीतियों को प्रभावित किया और उन्हें अपने प्रभाव और श्रेष्ठता को मानने के लिए बाध्य किया।

गुप्त सम्राटों ने बर्बर हूण जाति के आक्रमणों से भारत की रक्षा की। इसके अतिरिक्त आर्थिक वैभव और बौद्धिक प्रगति गुप्त काल की अन्य विशेषताएं थीं जिनके कारण धर्म, साहित्य, कला, विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में भारत ने अद्वितीय प्रगति की। **हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान**, **धार्मिक सहिष्णुता**, **संस्कृत भाषा** और **साहित्य की श्रेष्ठता** का निर्माण और **कला तथा विज्ञान** की दृष्टि से **अद्वितीय** प्रगति आदि सभी कुछ इस काल की देन रही।

गुप्त काल में भारत की हिन्दू संस्कृति का प्रसार उत्तर-पश्चिमी और दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में हुआ जिससे बृहत्तर भारत का निर्माण हुआ।

राजनीतिक और सैनिक शक्ति, कृषि, व्यापार और उद्योगों की प्रगति से उत्पन्न आर्थिक सम्पन्नता, समाज और धर्म में सहिष्णुता तथा उदार दृष्टिकोण, विज्ञान और कला में अन्वेषण-प्रवृत्ति, बौद्धिक ज्ञान की लालसा और साहित्य में रुचि, विदेशों में हिन्दू संस्कृति के प्रसार आदि ने गुप्त काल को एक महान युग और प्राचीन भारत के इतिहास का **'स्वर्ण-काल'** कहलाने का अधिकारी बना दिया।

गुप्त साम्राज्य का स्रोत

कुषाण साम्राज्य के पतन से लेकर गुप्त साम्राज्य के उदय तक के काल को जानने के स्रोत अथवा साधन इतने नगण्य हैं कि उस सदी को भारतीय इतिहास में **'अंधकारपूर्ण सदी'** पुकारा गया है। परन्तु हमें चौथी सदी से गुप्त काल के इतिहास को जानने के साधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो जाते हैं, जो निम्नवत् हैं:

गुप्तवंश के शासक

• शासक का नाम	शासन का वर्ष
• श्रीगुप्त	लगभग 240-280 ई.
• घटोत्कच	लगभग 280-319 ई.
• चद्रगुप्त प्रथम	320-335 ई.
• समुद्रगुप्त	335-375 ई.
• रामगुप्त	375-380 ई.
• चन्द्रगुप्त द्वितीय	380-415 ई.
• कुमारगुप्त महेन्द्रादित्य	415-455 ई.
• स्कन्दगुप्त	455-467 ई.
• पुरुगुप्त	467-473 ई.
• कुमारगुप्त द्वितीय	473-477 ई.
• बुधगुप्त	477-495 ई.
• नरसिंहगुप्त (बालादित्य)	495-430 ई.
• भानुगुप्त और वैन्यगुप्त	510-517 ई.
• कुमारगुप्त III	530-543 ई.
• विष्णुगुप्त	543-550 ई.

साहित्यिक स्रोत

साहित्यिक स्रोतों में पुराणों का महत्वपूर्ण स्थान है। पुराणों की संख्या 18 है, किन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से **'वायु पुराण', 'ब्रह्माण्ड पुराण', 'मत्स्य पुराण', 'विष्णु पुराण' और 'भागवत पुराण'** अत्यधिक महत्व रखते हैं। पुराणों से गुप्त साम्राज्य तथा उसके विभिन्न प्रान्तों और सीमाओं का स्पष्ट संकेत मिलता है।

पुराणों के अनुसार चन्द्रगुप्त प्रथम प्रयाग, साकेत (अयोध्या) तथा मगध में राज्य करता था। समुद्रगुप्त के राज्य के पूर्वार्द्ध में उसके समकालीन शासकों जैसे **नाग** तथा **वाकाटक** वंश और **सिन्धु तथा पश्चिमी** पंजाब के शक आदि का पूर्ण विवरण पुराणों से ही प्राप्त होता है।

के.पी. जायसवाल मानते हैं कि नारद का समय पूर्व गुप्त काल था। सम्भवत: वृहस्पति भी पूर्व गुप्त काल में ही जीवित रहे। व्यास, हारित, पितामह और पुलस्त्य की स्मृतियां भी सम्भवत: गुप्त काल में ही लिखी गयी थीं। **'कामन्दक नीतिसार'** की रचना सम्भवत: चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में उसके प्रधानमंत्री शिखर ने की। पुस्तक का उद्देश्य राजा को आदेश देना था।

काव्य नाटक **'सेतुबन्धकाव्य'** या **'सेतुकाव्य'**, **'कौमुदीमहोत्सव'**, **'देवीचन्द्रगुप्तम्'** और **'मुद्राराक्षस'** से गुप्त साम्राज्य के विषय में उल्लेखनीय जानकारी प्राप्त होती है। 'सेतुबन्धम्' एक प्राकृत काव्य है जिसकी रचना वाकाटक राजा प्रवरसेन ने की थी।

अध्याय 11

गुप्त काल के परवर्ती राज्य

वाकाटक राजवंश

तीसरी शताब्दी ईस्वी से छठीं शताब्दी ईस्वी तक **दक्षिणापथ** में शासन करने वाले समस्त राजवंशों में वाकाटक वंश सर्वाधिक सम्मानित तथा सुसंस्कृत था। इस यशस्वी राजवंश ने मध्य भारत तथा दक्षिण भारत के ऊपरी भाग में शासन किया। यह मगध के चक्रवर्ती गुप्त वंश का समकालीन था। इस राजवंश के लोग **विष्णुबुद्धि गोत्र के ब्राह्मण** थे तथा उनका मूल निवास स्थान **बरार** (विदर्भ) में था।

इतिहास के स्त्रोत

वाकाटक इतिहास के अध्ययन के लिए हम साहित्य तथा अभिलेख दोनों का उपयोग करते हैं।

साहित्य स्त्रोत: साहित्य के अन्तर्गत पुराणों तथा **बाणभट्ट कृत** 'हर्षचरित' का उल्लेख किया जा सकता है। इनमें अन्य राजवंशों के साथ-साथ वाकाटक वंश का भी उल्लेख हुआ है।

अभिलेखीय स्त्रोत: वाकाटक वंश के **अनेक लेख** जैसे- 1. हरहा का लेख, 2. जौनपुर का लेख, 3. असीरगढ़ का मुद्रालेख, 4. बराबर तथा नागार्जुनी के लेख, 5. बड़वा-यूप अभिलेख, 6. सोहनाग का लेख प्राप्त हुए हैं, जिनके अध्ययन से हम इस वंश के इतिहास का ज्ञान करते हैं। प्रमुख लेखों का विवरण इस प्रकार है:

1. प्रभावती गुप्ता का पूना ताम्रपत्र
2. प्रवरसेन द्वितीय का रिद्धपुर ताम्रपत्र
3. प्रवरसेन द्वितीय की चमक प्रशस्ति
4. हरिषेण का अजन्ता गुहाभिलेख

पूना तथा रिद्धपुर के ताम्रपत्रों से वाकाटक-गुप्त सम्बन्धों पर भी प्रकाश पड़ता है। इनसे प्रभावती गुप्ता के व्यक्तित्व तथा कार्यों के विषय में भी जानकारी मिलती है। **अजन्ता गुहाभिलेख** इस वंश के शासकों की राजनैतिक उपलब्धियों का विवरण देता है। इससे पता चलता है कि इस राजवंश का संस्थापक विन्ध्यशक्ति था।

मूल निवास स्थान: डॉ. के.पी. जायसवाल ने वाकाटकों का मूल निवास स्थान **बुन्देलखण्ड** को बताया है, जबकि कुछ अन्य विद्वान उसे सुदूर दक्षिण बताते हैं। परन्तु अधिकांशतया यह माना जाता है कि वे मध्य प्रदेश के किसी भाग में रहते थे। यह भी माना जा सकता है कि वे आरम्भ में सातवाहन शासकों के अधीन शासक थे अथवा उनके प्रान्तपति थे।

ऐतिहासिक स्त्रोतों से ज्ञात होता है कि अपनी उन्नति की चरम सीमा पर पहुंचने के समय वाकाटकों के साम्राज्य में सारा बुन्देलखंड का प्रदेश बरार, मध्य प्रांत तथा कुछ दक्षिण के उत्तरी भाग के हिस्से शामिल थे।

विन्ध्यशक्ति (255-275 ई.)

वाकाटक राजवंश की स्थापना विन्ध्यशक्ति ने 255 ईस्वी के लगभग की थी। विन्ध्यशक्ति विष्णुवृद्धि गोत्र का ब्राह्मण था। उसके पूर्वज सातवाहनों के अधीन बरार के स्थानीय शासक थे।

सातवाहनों के पतन के पश्चात विन्ध्य शक्ति ने अपनी स्वतन्त्रता घोषित कर दी। **अजन्ता अभिलेख** में उसे **'वंश केतु'** कहा गया है। उसके नाम से अनुमान लगता है कि उसका राज्य विन्ध्याचल पर्वत के निकट रहा होगा और वाकाटक जिसके नाम पर उसके वंश का नाम पड़ा, वहीं पर किसी स्थान का नाम था। उसने अपने पैतृक राज्य को विन्ध्यपर्वत के उत्तर में पूर्वी मालवा तक विस्तृत किया।

प्रवरसेन प्रथम (275-335 ई.)

विन्ध्यशक्ति के पश्चात उसका पुत्र तथा उत्तराधिकारी **प्रवरसेन प्रथम** (275-335 ईस्वी) शासक हुआ। वाकाटक वंश का वह अकेला ऐसा शासक था जिसने 'सम्राट' की उपाधि धारण की थी। वह एक विजेता शासक था जिसने अपने राज्य को सभी दिशाओं में विस्तृत किया। उसके साम्राज्य में उत्तरी महाराष्ट्र, बरार, मध्य प्रान्त तथा हैदराबाद का एक बड़ा भाग शामिल था। इसके अतिरिक्त दक्षिणी कौशल, बघेलखण्ड, मालवा, गुजरात तथा सौराष्ट्र में भी उसका शासन स्थापित हुआ। पुराणों से पता लगता है कि **प्रवरसेन प्रथम ने चार अश्वमेध यज्ञ** किये थे।

वाकाटक वंश के शासक

	शासक का नाम	शासन का वर्ष
1.	विन्ध्यशक्ति	255-275 ईस्वी
2.	प्रवरसेन प्रथम	275-335 ईस्वी
3.	रुद्रसेन प्रथम (प्रधान शाखा)	335-360 ईस्वी
4.	पृथ्वीसेन प्रथम	360-385 ईस्वी
5.	रुद्रसेन द्वितीय	385-390 ईस्वी
6.	प्रभावती गुप्ता का संरक्षण काल	390-410 ईस्वी
7.	प्रवरसेन द्वितीय (दामोदरसेन)	410-440 ईस्वी
8.	नरेन्द्रसेन	440-460 ईस्वी
9.	पृथ्वीषेण द्वितीय	460-480 ईस्वी
10.	सर्वसेन (संस्थापक, बासीम शाखा)	330-350 ईस्वी
11.	विन्ध्यशक्ति द्वितीय	350-400 ईस्वी
12.	हरिषेण	475-510 ईस्वी

अध्याय 12

महत्वपूर्ण शब्दावली

विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली

* **प्रागैतिहास:** प्रागैतिहास से तात्पर्य उस काल से है, जिसका कोई लिखित साक्ष्य नहीं मिलता।
* **आद्य इतिहास:** आद्य इतिहास वह है जिसमें लिपि के साक्ष्य तो हैं, किन्तु उनके अपठ्य या दुर्बोध होने के कारण उनसे कोई निष्कर्ष नहीं निकलता।
* **ऐतिहासिक काल:** जिस काल से लिखित साक्ष्य उपलब्ध होने लगते हैं, वह ऐतिहासिक काल है।
* **प्लाइस्टोसीन एज (प्रतिनूतन काल):** इस सभ्यता का उदय व विकास आज से लगभग पाँच लाख वर्ष पूर्व हुआ माना जाता है।
* **कोर प्रणाली (Core Tradition):** इसके अन्तर्गत किसी पाषाण खण्ड को छील कर अभीष्ट हथियार अथवा औजार की आकृति दे दी जाती थी।

हड़प्पा कालीन पारिभाषिक शब्दावली

* **ताम्राश्म:** इस सभ्यता में उपकरण बनाने के लिए ताम्र के साथ-साथ पत्थर का भी उपयोग किया जाता था। अतएव यह संस्कृति (सिंधु सभ्यता) ताम्राश्म संस्कृति के नाम से भी जानी जाती है।
* **कोचली मिट्टी:** इस मिट्टी में पत्थर के महीने चूरे को आटे की तरह सानकर वस्तुएँ बनाई जाती थी जिन्हें बाद में आग में पकाया जाता था। इस प्रकार की मिट्टी का प्रयोग लोथल में हुआ है।
* **दरियापंथी:** सिंधु सभ्यता में नदी पूजकों का एक सम्प्रदाय था, जो 'दरियापंथी' कहलाता था।
* **त्रिशीर्ष:** शिव को 'त्रिशीर्ष' कहा जाता है।
* **त्रिशृंग:** महाभारत में शिव को त्रिशृंग अर्थात तीन सींग वाला बताया गया है।
* **आर.एच.-37:** हड़प्पा के दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक कब्र।
* **बाउस्ट्रोफेडन:** सिंधु सभ्यता की लेखन प्रणाली, इसमें पहली पंक्ति दाहिनी से बाईं ओर तथा दूसरी बाईं से दाहिनी ओर लिखी गई है।
* **इंगलिश बाण्ड पद्धति:** यह मकान की दीवार मजबूत बनाने की एक प्रक्रिया है। इस पद्धति में ईंटों की एक तह लम्बाई में, फिर एक तह चौड़ाई में, फिर एक तह लम्बाई में, फिर एक तह चौड़ाई में रखी जाती है और यह प्रक्रिया पूरी दीवार में दोहराई जाती है, जिससे ईटों के किनारे एक सीध में नहीं पड़ते और दीवार मजबूत बनती है। सिंधु सभ्यता में दीवारों की चुनाई में ईटों का प्रयोग इसी पद्धति पर किया गया है।

ऋग्वैदिक पारिभाषिक शब्दावली

* **कुलप:** परिवार के प्रमुख को कुलप कहते थे।
* **विश :** ग्राम के ऊपर की एक प्रशासनिक इकाई थी।
* **स्पश:** राज्य का गुप्तचर था।
* **चर्षिनी:** यह शब्द ऋग्वेद में कृषि के लिए आया है।
* **वेद त्रयी:** प्रथम तीन वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद वेद त्रयी के नाम से जाने जाते हैं।
* **गविष्टि:** इसका अर्थ गायों की खोज था।
* **पणि:** पशुओं का चोर था।
* **रयि:** इसकी गणना मुख्यत: मवेशियों से होती थी।
* **भागदुध:** कर संग्रह करने वाला अधिकारी भागदुध कहलाता था।
* **गोवि कर्तन:** आखेट में राजा का साथी।
* **क्षतृअक्षावाप:** जुए का निरीक्षक।
* **इभ्य:** धनवान व्यक्ति।
* **अमाजू:** दीर्घकाल तक अविवाहित रहने वाली कन्याएं।
* **सृणि:** दरौती के कतिपय अवशेष।
* **विशमत्ता:** उत्पादक वर्गों का भक्षक।
* **अब्रह्मन:** वेदों को न मानने वाले।
* **मृध्रवाक:** कटु वाणी वाले, इसका प्रयोग आर्यों के एक अन्य शत्रु पणियों के लिए भी किया गया है।
* **श्मश्रु:** दाढ़ी को 'श्मश्रु' कहा जाता था।
* **पुरचीरेष्णु:**दुर्गों का भेदन करने वाला यंत्र।
* **रत्नी:** ग्रामणी, सूत, रथकार और कर्मार को 'रत्नी' कहा गया है।
* **नियोग प्रथा:** विधवा स्त्री का पुत्र प्राप्ति के निमित्त अपने देवर के साथ पत्नी के रूप में रहना।
* **दुहिता:**पुत्रियों को कहा जाता या क्योंकि परिवार की गायों को दुहने का दायित्व उन्हीं पर था।

उत्तर वैदिक कालीन पारिषाषिक शब्दावली

* **अरिष्टा:** अथर्ववेद में समिति को 'अरिष्टा' कहा गया है।
* **अक्षवाप:** आय-व्यय का विवरण रखने वाला अक्षवाप कहलाता था।
* **पालागरव:** दूत या संदेशवाहक।
* **भागदुध:** कर संग्रह करने वाले अधिकारी को भागदुध कहते थे।
* **परिषद:** उच्च शिक्षा के लिए नियमित संस्था 'परिषद' थी।
* **क्षौम:** धनी तथा राजघराने के लोगों द्वारा पहने जाने वाला वस्त्र।
* **निष्क:** ऋग्वैदिक काल का आभूषण, जो उत्तरवैदिक काल में सिक्का माना जाने लगा।